एक कहानी कई रंग–19 ः

तीस मार खॉ जैसी कहानियॉ

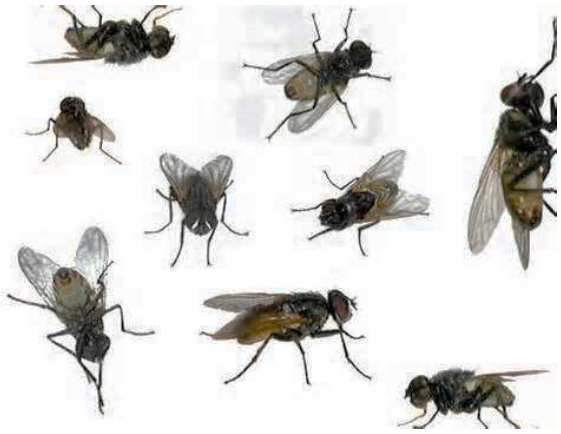

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2020

Book Title: Tees Maar Khan Jaisi Kahaniyan-19 (Tees Maar Khan Like Stories-19)
Cover Page picture : Flies
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5
तीस मार खाँ जैसी कहानियाँ 7
1 तीस मार खाँ की कहानी 9
2 बहादुर विकी बहादुर जुलाहा 16
3 जौन बालेन्टो 30
4 बहादुर छोटा दर्जी 42
5 चमार 61
6 बहादुर कुम्हार 64
7 अप्पय्या की कहानी 77

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2500,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

तीस मार ख़ॉ जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियों एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। इन पुस्तकों की पहली कहानी वह कहानी है जो बहुत लोकप्रिय कहानी है उसके बाद ही फिर उसकी जैसी और कहानियॉ दी गयी हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"[2]। इस सीरीज़ में अब तक हम **18** पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन पुस्तकों की सूची इस पुस्तक के अन्त में दी गयी है।

अब यह **19**वीं पुस्तक प्रस्तुत है "तीस मार ख़ॉ जैसी कहानियॉ"। बच्चों तुमने तीस मार ख़ॉ कहावत तो सुनी ही होगी जब लोग यह कहते हैं कि "बड़े तीस मार ख़ॉ बने फिरते हो ज़रा यह काम तो कर के दिखाओ।" यह कहावत तब इस्तेमाल होती है जब कोई अपनी बहुत ज़्यादा शेख़ी बघारता है पर कर कुछ नहीं पाता। पर शायद तुमको इसके बारे में यह पता नहीं होगा कि यह कहावत निकली कैसे।

इस संग्रह में यह कहानी सबसे पहले दी गयी है। पर ऐसी कहानी केवल एक ही देश में नहीं पायी जाती और देशों में भी ऐसी कहानियॉ पायी जाती हैं क्योंकि शेख़ी बघारने वाले तो दुनियॉ में सभी जगह पाये जाते हैं न। ये सब कहानियॉ **5–6** साल तक के बच्चों के लिये बहुत अच्छी हैं। तो लो पढ़ो ये कहानियॉ "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ की **19**वीं कड़ी – "तीस मार ख़ॉ जैसी कहानियॉ"।

[2] "One Story Many Colors-1" – Cat and Rat Like Stories

1 तीस मार खॉ की कहानी[3]

एक बार की बात है कि भारत में एक बड़ी उम्र की विधवा रहती थी जिसके एक ही बेटा था। हालॉकि वह विधवा बेचारी तो बहुत मेहनती थी पर जैसे जैसे उसका वह बेटा बड़ा होता गया वह और आलसी होता गया। वह सारा सारा दिन कुछ नहीं करता था।

एक दिन जब वह लड़का काफी बड़ा हो गया तो उसकी मॉ ने उससे कहा कि अब उसके गॉव छोड़ने का समय आ गया है ताकि वह कुछ बन सके। सो उसने उसके लिये चार रोटियॉ बॉधीं और उसको शहर के लिये विदा किया।

लड़का चलता गया चलता गया जब तक रात नहीं हो गयी। उस समय वह एक जंगल से गुजर रहा था। वहॉ पहुॅच कर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और अपनी पोटली खोल कर अपनी रोटी खाने लगा जो उसकी मॉ ने उसको बॉध कर दी थीं।

जैसे ही उसने अपने खाने की पोटली खोली तो उसकी सुगन्ध ने पास में उड़ रही मक्खियों को आकर्षित कर लिया। वे उसकी सबसे ऊपर रखी रोटी पर आ कर बैठ गयीं।

लड़के को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा सो उसने उनको वहॉ से उड़ाने के लिये अपना हाथ उस रोटी पर ज़ोर से मारा। जब

[3] Who Was Tees Maar Khan in History?" by Nirmal Goyal. Taken from the Web Site: https://www.quora.com/Who-was-Tees-Mar-Khan-in-history

उसने अपना हाथ रोटी पर से उठाया तो उसने देखा कि उसकी रोटी पर तो बहुत सारी मक्खियॉ मरी पड़ीं हैं। उसने उनको गिनना शुरू किया तो एक दो तीन चार... कुल मिला कर तीस मक्खियॉ थीं।

इसका मतलब यह हुआ कि उसने एक बार में एक हाथ से तीस मक्खियॉ मार दी थीं। वह तो अपने इस कारनामे पर बहुत ही खुश हो गया।

अगली सुबह वह एक दूसरे गॉव पहुॅचा। वहॉ जा कर वह जिस पहले आदमी से मिला उसने उससे कहा "मैंने एक बार में तीस मार दीं।"

वह आदमी यह सुन कर उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसने यह बात सारे राज्य में फैला दी कि एक आदमी आया है जिसने तीस आदमी एक बार में ही मार दिये हैं। सो लोगों में वह तीस मार खॉ के नाम से मशहूर हो गया।

फैलते फैलते यह खबर राजा के पास पहुॅची। यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ और उसने उसे अपनी सेना का सेनापति बना लिया। उसने उसको रहने के लिये घर दिया और भी बहुत सारा आराम का सामान दिया।

कुछ दिनों तक तो तीस मार खॉ राजा की नौकरी में रहा कि जल्दी ही राज्य में एक भालू आ पहुॅचा जो वहॉ के लोगों को मार मार कर तंग कर रहा था।

जनता में खलबली मच गयी तो राजा ने तीस मार खॉ से कहा कि वह इस मामले को देखे। अब तीस मार खॉ राजा से बहस तो कर नहीं सकता था सो उसने एक रस्सी ली और एक खच्चर लिया और उस गॉव में आ पहुॅचा जहॉ यह सब हो रहा था।

वह वहॉ शाम को आया क्योंकि वह जानवर उसी समय लोगों पर हमला किया करता था। बहुत सारे लोग तो उसके डर के मारे उस समय अपने अपने घरों में छिप गये पर तीस मार खॉ को एक गरीब बूढ़ी कुम्हारिन मिल गयी जो अपने मिट्टी के बर्तन और दूसरी चीज़ें घर के बाहर ला ला कर रख रही थी।

उसको देख कर तीस मार खॉ ने उससे पूछा कि इस समय वह बाहर वहॉ क्या कर रही थी तो उस बुढ़िया ने आसमान की तरफ इशारा करते हुए कहा "देखो ज़रा। मैं उस भालू से नहीं डरती जितना कि मैं अपनी छत के टपके से डरती हूॅ। अगर मेरा घर टपक गया तो मेरा सारा सामान खराब हो जायेगा।"

जब यह सब बातें हो रहीं थी तो उनको पता ही नहीं था कि भालू वहीं पास में खड़ा यह सब सुन रहा था और अपने हमले की तैयारी कर रहा था।

जब उसने उस बुढ़िया के शब्द सुने तो वह तो डर के मारे वहीं का वहीं खड़ा रह गया। उसने सोचा यह टपका क्या होता है जो उससे भी ज़्यादा भयानक है। जरूर ही वह कोई उससे भी बड़ा और भयानक जानवर होगा।

तीस मार खॉ ने अपने खच्चर को उस रात अपने पास ही रखा ताकि वह उसे शिकार को पकड़ने के लिये चारे की तरह इस्तेमाल कर सके। वह एक पेड़ के सहारे बैठ गया और भालू का इन्तजार करने लगा।

वह बैठे बैठे थक गया तो उसको नींद आ गयी। जब उसकी ऑख खुली तभी भी आधी रात ही थी। बारिश शुरू हो गयी थी और उसने उसको अपने सिर पर पड़ते महसूस किया।

यह सोचते हुए कि जानवर ऐसी बारिश में अब नहीं आयेगा तीस मार खॉ ने सोचा कि वह अब अपने खच्चर को किसी छत के नीचे खड़ा कर दे। सारे आसमान पर काले काले बादल थे। चारों तरफ ऍधेरा ही ऍधेरा था उसको कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

वह अपने हाथों को इधर उधर कर के उनसे छू छू कर महसूस कर के देख रहा था कि उसका खच्चर कहॉ है ताकि वह उसे किसी छत के नीचे बॉध सके कि उसके हाथ में भालू आ गया। वह उस पर चढ़ गया और उसे आगे धकेलने की कोशिश करने लगा।

तीस मार खॉ को यह पता ही नहीं था कि उस जानवर के साथ उसका यह व्यवहार ठीक नहीं था। वह तो बस उसकी पीठ पर बैठा हुआ था। जानवर वैसे ही बहुत परेशान था।

वह सोच रहा था कि ऐसा कौन सा जानवर हो सकता है जो उसकी पीठ पर इतनी आसानी से बैठ गया और अब उसको आगे चलने के लिये कह रहा है।

उसको लगा कि यह खतरनाक टपका ही होगा जो उसके ऊपर इतनी आसानी से चढ़ सका। उसको यह केवल लगा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास हो गया कि यह टपका ही है। वह डर गया और जैसा उसके मालिक ने उससे करने के लिये कहा उसने वैसा ही किया।

जब वे एक पेड़ के पास पहुँचे तो तीस मार खॉ ने अपनी रस्सी निकाल कर उसको उस पेड़ से बॉध दिया।

जब गॉव वाले सुबह उठे तो उन्होंने देखा कि भालू तो पेड़ से बॅधा खड़ा है। उन्होंने तीस मार खॉ की इस जीत को बड़े ज़ोर शोर से मनाया हालॉकि सबको इस बात पर आश्चर्य तो बहुत हुआ पर सच तो सामने था। सबने उसकी हीरो कह कर जयजयकार की।

खच्चर भी कहीं दूर जा कर मिला पानी में तर बतर बड़ी दयनीय हालत में। तीस मार खॉ महल लौटा तो राजा ने उसको सोने के रूप में बहुत सारा इनाम दिया। अब राजा को उस पर बहुत भरोसा हो गया था।

फिर कुछ दिन आराम से रहते बीत गये। तीस मार खॉ आराम की ज़िन्दगी बिता रहा था कि एक दिन उस राज्य के ऊपर एक पड़ोसी राजा ने हमला कर दिया।

राजा ने उसको फिर बुलाया और उससे दुश्मन को हराने के लिये कहा। इस बार उसने वायदा किया कि अगर उसने यह कर दिया तो वह अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी उससे कर देगा और उसे अपनी राजगद्दी का वारिस बना देगा।

हुआ यह कि तीस मार खॉ को एक बहुत बड़ी सेना ले कर दुश्मन से लड़ने के लिये भेजा गया। अब वह तो एक गॉव की एक विधवा का बेटा था उसको सेना के नियमों का बिल्कुल पता नहीं था। सुबह को तो लड़ाई शुरू हो जायेगी।

जैसे ही सुबह का सूरज आसमान में निकला दोनों तरफ की सेनाऐं लड़ने के लिये तैयार हो गयीं। जो लोग घोड़े पर चढ़ कर लड़ने वाले थे वे अपनी अपनी तलवारें और बड़ी बड़ी गदाऐं ले ले कर एक दूसरे की तरफ भयानक दृष्टि से देखते हुए मैदान में खड़े हुए थे।

तीस मार खॉ ने जिसने पहले कभी कोई लड़ाई लड़ी नहीं थी घोड़े पर सीधा बैठने के लिये अपने आपको घोड़े से बॉध रखा था। लड़ाई शुरू करने के लिये ढोल बजने शुरू हो गये। दोनों सेनाओं ने एक दूसरे पर हमला करना शुरू कर दिया।

राजा की तरफ से तीस मार खॉ उस सेना का सेनापति था और उसको ले कर आगे बढ़ने वाला था सो जैसे ही उसके घोड़े ने आगे बढ़ना शुरू किया और तेज़ भागना शुरू किया वह डर गया। उसकी तलवार जमीन पर गिर गयी सो उसने तलवार उठाने की बजाय पास में खड़ा एक पेड़ का तना पकड़ लिया।

पर वह तो अपने घोड़े से कस कर बॅधा था जो बहुत तेज़ रफ्तार से भागा चला जा रहा था। उधर तीस मार खॉ ने डर के मारे

पेड़ को भी कस कर पकड़ रखा था सो इस खींचातानी में वह पेड़ जड़ से उखड़ आया।

दुश्मन की सेना ने देखा कि तीस मार खॉ एक पेड़ का तना हाथ में लिये हुए अपनी पूरी रफ्तार से उनकी तरफ चला आ रहा है। चेहरे पर उसके डर था और कन्धे पर पेड़ का तना।

यह देख कर वे डर गये और तुरन्त ही पीछे भाग लिये। दुश्मन हार गया था राज्य में शान्ति हो गयी। तीस मार खॉ राजा के पास महल लौट आया। राजा ने अपने वायदे के अनुसार अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी उसके साथ कर दी।

उसके बाद तीस मार खॉ फिर कभी लड़ने नहीं गया और शान्ति से अपने दिन गुजारे।

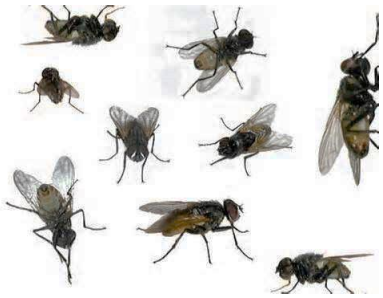

2 बहादुर विकी बहादुर जुलाहा[4]

तीस मार खॉ जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह दूसरी कहानी भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक छोटा सा जुलाहा रहता था जिसका नाम था विक्टर प्रिंस। क्योंकि उसका सिर बड़ा था लम्बी पतली टॉगें थी पर कुल मिला कर वह छोटा सा और कमजोर सा था तो लोग उसको छोटा विकी कह कर बुलाया करते थे।

उसके छोटे साइज़, पतली टॉगों और उसकी अजीब सी शक्ल होने के बावजूद विकी बहुत ही शानदार लगता था। उसको अपनी बहादुरी की बातें करने का बहुत शौक था। वह घंटों तक अपनी बहादुरी की और वीरता की उन बातों की बात करता रहता था जिनको अगर उसको मौका दिया जाता तो वह कर सकता था।

पर बस वह सब उसकी किस्मत में ही नहीं था इसलिये वह बस छोटा विकी जुलाहा ही बना रहा। सारे लोग उसकी शान बघारने की हॅसी उड़ाया करते थे।

एक दिन विकी अपनी खड्डी[5] पर बैठा हुआ कपड़ा बुन रहा था कि एक मच्छर उसके

[4] Valiant Vicky, The Brave Weaver – A folktale from Punjab, India, Asia.
Adapted from the Web Site : http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html
Taken from the book "Tales of the Punjab" By Flora Annie Steel. 1894. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[5] Translated for the word "Loom" on which weavers weave cloth. See its picture above.

बाँये हाथ पर उसी समय आ कर बैठ गया जब कि वह अपने दाँये हाथ से शटल चलाने जा रहा था।

और इत्तफाक से जैसे ही उसने धागे के अन्दर से वह शटल चलायी और शटल उसके बाँये हाथ में उसी जगह आ गयी जहाँ वह मच्छर बैठा हुआ था। उसने मच्छर को कुचल दिया।

यह देख कर विकी तो बहुत ही खुश हो गया। वह चिल्लाया — "यह तो वैसा ही हो गया जैसा कि मैं कहा करता था कि अगर मुझे मौका दिया गया तो मैं अपनी बहादुरी दिखा सकता हूँ। अब मैं यह जानना चाहता हूँ कि कितने लोग ऐसा कर सकते हैं।

मच्छर मारना तो आसान है और शटल चलाना भी आसान है पर दोनों काम एक साथ करना तो बहुत ही मुश्किल काम है। एक बड़े मोटे आदमी को दूर से मारना तो बहुत आसान है क्योंकि उसको देखना आसान है उसके ऊपर निशाना लगाना आसान है।

बन्दूक और तीर कमान बनाना भी आसान है पर एक मच्छर को कपड़ा बुनने की शटल से मारने की तो बात ही अलग है। इसके लिये एक आदमी[6] की जरूरत है।

जितना वह इस बारे में सोचता जाता था उतना ही ज़्यादा वह अपनी होशियारी और बहादुरी के बारे में ऊँचा सोचता जाता था। अन्त में वह इस फैसले पर पहुँच कि अबसे वह विकी नहीं कहलायेगा। उसने अपनी बहादुरी दिखायी है तो वह अब विक्टर

[6] Translated for the word "Man"

कहलायेगा – विक्टर प्रिंस। बल्कि उन सबको उसे राजकुमार विक्टर कह कर बुलाना चाहिये। यही नाम उसके गुणों के लिये ठीक था।

पर जब उसने अपनी यह बात अपने पड़ोसियों से कही तो वे तो बहुत ज़ोर से हॅस पड़े हालॉकि कुछ ने उसे राजकुमार विक्टर कह कर भी पुकारा। पर वह उन्होंने उसे ऐसे हॅसते हुए मजाक में कहा कि उस छोटे आदमी को बहुत गुस्सा आ गया और वह गुस्से में भर कर अपने घर चला गया।

यहॉ भी उसका कोई बहुत बढ़िया स्वागत नहीं हुआ क्योंकि उसकी पत्नी ने जो एक बहुत ही सुन्दर नौजवान स्त्री थी और जो अपने इस छोटे से अजीब से पति के सोचने के ढंग से बहुत ज़्यादा तंग आ चुकी थी उसको अपनी बात कहने से रोकने के लिये बहुत मना किया। और साथ में यह भी कहा कि वह अपना बेवकूफ न बनवाये।

यह सुन कर उसने अपने घमंड में उसके बाल पकड़ कर बहुत ही बेरहमी से पीटा और तय किया कि वह अब इस शहर में नहीं रहेगा जहॉ उसके गुणों को कोई पहचानता ही नहीं है। उसने अपनी पत्नी से उसकी यात्रा के लिये खाना बनाने के लिये कहा और अपने सामान की गठरी बॉध ली।

उसने अपने आप से कहा "अब मैं दुनियॉ घूमॅूगा। जो आदमी एक शटल से एक मच्छर को मार सकता है उसको किसी के पीछे

छिप कर नहीं रहना चाहिये। उसने रोटी एक रूमाल में बाँधीं शटल ली और अपनी गठरी उठा कर वहाँ से चल दिया।

चलते चलते वह एक ऐसे शहर में आ गया जिसमें एक हाथी रोज उस शहर के लोगों को खाने के लिये आया करता था। बहुत बड़े बड़े योद्धा उसे मारने के लिये गये पर कोई वापस भी नहीं लौट सका।

यह सुन कर बहादुर छोटे जुलाहे ने सोचा "यहाँ मेरा मौका है। जिस आदमी ने एक शटल से एक मच्छर मारा हो उसके लिये इतना बड़ा हाथी मारना तो एक बहुत ही बड़ा काम होगा।"

यह सोच कर वह वहाँ के राजा के पास गया और उससे कहा कि वह अकेला ही हाथी को पकड़ कर मार देगा। पहले तो राजा को लगा कि यह छोटा आदमी कुछ पागल सा लगता है पर जब वह अपनी बात पर अड़ा रहा तो उसने कहा कि वह उस खतरे से खेलने के लिये अपनी किस्मत आजमाने के लिये आजाद है।

साथ में उसने उससे यह भी कहा कि बहुत से लोग पहले ही कोशिश कर चुके हैं पर कोई उसको मार नहीं सका।

फिर भी हमारे बहादुर योद्धा को बिल्कुल भी डर नहीं लगा। उसने राजा से कोई तलवार या तीर कमान लेने से भी मना कर दिया। बस उसने अपनी शटल और खाने की पोटली उठायी और हाथी को मारने चल दिया।

उसने उन सब लोगों से जिन्होंने भी उससे कोई और अच्छा हथियार ले जाने के लिये कहा अपनी शान बघारते हुए कहा कहा कि "बस यही मेरा हथियार है और मैं इसे अच्छी तरह इस्तेमाल करना जानता हूँ। मेरा यह हथियार बहुत अच्छा काम करता है।"

वह एक बड़ा अच्छा दृश्य था जब वह बहादुर छोटा विकी अपने दुश्मन के पास चला जा रहा था। शहर के बहुत सारे लोग यह अजीबो गरीब लड़ाई देखने के लिये दीवारों पर चढ़े हुए थे।

हाथी से मिलने से पहले हमारा बहादुर छोटा विकी जुलाहा जितना बहादुर था और जितनी ज़ोर से अपना बिगुल बजा रहा था उसकी वह बहादुरी तब सब खत्म हो गयी जब हाथी उसके सामने आया और आ कर सामने से उसके ऊपर हमला किया।

वह अपना नया नाम राजकुमार विक्टर भूल गया उसके हाथ से उसकी पोटली जिसमे उसकी शटल और उसकी रोटी रखी थी नीचे गिर पड़ी और वह वहॉ से जितनी तेज़ी से भाग सकता था पीछे भाग लिया।

अब हुआ यह कि उसकी पत्नी ने उसके लिये रोटियॉ उसमें पड़े जहर को छिपाने के लिये बहुत मीठी बनायी थीं और उनमें बहुत सारे खुशबूदार मसाले डाले हुए थे क्योंकि वह नीच स्त्री अपना बदला लेने के लिये उस थका देने वाले खब्ती पति को मार डालना चाहती थी।

जैसे ही हाथी उस पोटली के पास से गुजरा तो उसको उन मीठी रोटियों की बहुत ज़ोर से खुशबू आयी। उसने अपनी लम्बी सूँड़ से वह पोटली उठायी और पल भर में ही उसकी सारी रोटियाँ खा गया।

इस बीच राजकुमार विक्टर की पतली टाँगों में डर के मारे कुछ ज़रा ज़्यादा ही जान आ गयी सो वह वहाँ से अपनी पोटली छोड़ कर बहुत तेज़ भागा। हालाँकि वह एक बड़े खरगोश[7] की तरह से भाग रहा था फिर भी हाथी जल्दी ही उसके पास आ गया।

वह बेकार में ही अपनी दोगुनी गति से भागने की कोशिश कर रहा था। हाथी की गर्म साँसें उसके पास आती जा रही थीं। बहुत ही नाउम्मीद हो कर वह पलटा ताकि वह उस बड़े जानवर की टाँगों के बीच में से हो कर निकल जाये।

डर के मारे उसे कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था सो वह बजाय उन टाँगों में से निकलने के उनसे दूसरी दिशा में भाग लिया। किस्मत की बात कि तभी उन रोटियों के जहर ने अपना काम किया और लो हाथी तो मर कर नीचे गिर पड़ा।

जब देखने वालों ने हाथी को इस तरह से गिरते देखा तो उनकी आँखों को तो इस बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हुआ पर जब

[7] Translated for the word “Hare”. Hare is a rabbit-like animal but a little bigger than that. See its picture above.

वे उस जगह की तरफ दौड़े तो उनका आश्चर्य तो और भी ज़्यादा बढ़ गया जब उन्होंने देखा कि हमारा छोटा विकी जीत की खुशी में उसके सिर के ऊपर बैठा हुआ है और बड़ी शान्ति से अपने रूमाल से अपने माथे का पसीना पोंछ रहा है।

जब लोगों ने उससे पूछा कि वह हाथी से बच कर भागा क्यों था तो उसने बड़ी शान्ति से जवाब दिया — "मुझे उससे भागने का बहाना बनाना पड़ा वरना वह कायर मेरे पीछे भागता ही नहीं।

बस उसके बाद तो मैंने उसको बहुत ही हल्का सा धक्का मारा और जैसा कि तुम लोग देख रहे हो वह गिर पड़ा। हाथी बड़े जानवर जरूर होते हैं पर सच पूछो तो उनके अन्दर ताकत बिल्कुल नहीं होती।"

सारे भले लोग बहादुर विकी के इस लापरवाही के ढंग से अपनी जीत को बताने के लिये बहुत आश्चर्यचकित रह गये कि वह कितने सादे से ढंग से अपनी उस जीत को बता रहा था। वे लोग साफ तरीके से यह देख ही नहीं पाये कि वहाँ क्या हुआ था क्योंकि वह उससे काफी दूर खड़े थे।

वे तुरन्त ही राजा के पास दौड़े गये और उन्होंने जा कर उसको बताया कि उस डरपोक छोटे से जुलाहे ने तो उस उतने बड़े हाथी को मार गिराया है।

राजा ने सोचा "मेरा कोई योद्धा कोई कुश्ती लड़ने वाला कोई पुराना बहादुर आदमी इस काम को नहीं कर सका। मुझे इस आदमी

को अपने पास रख लेना चाहिये अगर यह मेरे पास रह जाये तो।" सो उसने विकी को बुलाया और उससे पूछा कि वह दुनियाँ में इधर उधर क्यों घूमता फिर रहा है।

बहादुर विकी बोला — "खुशी के लिये, दूसरों की सेवा के लिये और जीतने के लिये।" उसने अपने आखिरी शब्द पर बहुत ज़ोर दिया तो राजा ने जल्दी से उसको अपनी सेना का सेनापति बना लिया ताकि वह कहीं किसी और जगह नौकरी करने न चला जाये।

अब बहादुर विकी एक बहुत बढ़िया योद्धा हो गया था और वह अपने बारे में जो भविष्यवाणी करता था उनको सच होता देख कर मोर की तरह से गर्व करने लगा।

जब वह अपनी पूरी पोशाक में सजता, चमकता हुआ जिरहबख्तर पहनता, अपनी कमर से तलवार और ढाल लटकाता तो वह अपने आपसे कहता — "मैं तो पहले ही कहता था कि यह सब मेरे अन्दर है।"

इस तरह से कुछ दिन गुजर गये कि एक भयानक चीता राज्य में आ गया और देश में आ कर उत्पात मचाने लगा। यह देख कर शहर के लोगों ने राजा से विनती की कि वह राजकुमार विकी को उसके मारने का काम सौंप दें।

सो अपनी बड़ी सी सेना को ले कर वह उस चीते को मारने चल दिया। पर क्योंकि अब वह एक बड़ा आदमी हो गया था राजा की पूरी सेना का सेनापति था सो अब वह अपनी खड्डी और शटल को

इस्तेमाल करना बिल्कुल भूल गया था। लेकिन फिर भी उसने राजा से यह वायदा लिया कि अगर वह चीता मार देगा तो राजा उसकी शादी राजकुमारी से कर देगा।

उस छोटे जुलाहे ने अपने मन में कहा कि "कुछ नहीं के बदले में कुछ नहीं"। जब राजा ने यह वायदा कर लिया तभी वह वहाँ से खिसका।

जब वह जाने लगा तो जो लोग उसको छोड़ने आये थे उसने उनको समझाते हुए कहा — "ओ भले लोगों। अपने आप पर ज़्यादा बोझ मत डालना। मेरे लिये बहुत परेशान मत होना। यह तो नामुमकिन सी बात है कि चीता मुझे मार पायेगा। क्योंकि तुम लोगों ने देखा होगा कि मैंने एक अपनी एक छोटी उँगली छुआयी और हाथी मर गया। मुझे कोई नहीं जीत सकता।"

पर हमें अपने बहादुर विकी के लिये बहुत अफसोस है। जैसे ही चीता अपनी पूँछ हिलाते हुए उसके सामने उसके ऊपर हमला करने आया तो वह दौड़ कर सबसे पास वाले पेड़ पर चढ़ गया और उसकी शाखाओं में दुबक कर बैठ गया। वहाँ वह बन्दर की तरह बैठा रहा जबकि चीता उसकी तरफ खूँख्वार नजरों से देखता रहा।

जब सेना ने देखा कि उनका सेनापति तो चूहे की तरह से पेड़ पर छिप गया है तो वे भी उसकी नकल करते हुए शहर की तरफ तेज़ी से भाग गये। वहाँ जा कर उन्होंने यह खबर फैला दी कि वह छोटा आदमी तो भाग कर पेड़ पर छिप गया।

राजा ने मन ही मन खुश होते हुए आराम की सॉस लेते हुए कहा "उसको वहीं रहने दो।" क्योंकि वह खुद उस छोटे से आदमी की ताकत से जलता था और उससे अपनी बेटी की शादी नहीं करना चाहता था।

इस बीच डर के मारे विकी वहीं पेड़ पर दुबका बैठा रहा और चीता नीचे बैठा बैठा अपने दॉत किटकिटाता रहा मूँछें घुमाता रहा। विकी तो बस डर के मारे उसके मुँह में गिरने वाला ही होता रहता था।

इस तरह से उसको एक दिन बीता दो दिन बीते तीन दिन बीते। इस तरह से छह दिन बीत गये। सातवें दिन चीता बहुत नाराज हो गया और जुलाहे पर कड़ी नजर रखे रहा।

बेचारा छोटा जुलाहा बहुत भूखा था। इस भूख का इतना असर हुआ कि उसने इसको बहुत बहादुर बना दिया कि जब चीता दोपहर को झपकी मारता था तो उसने वहॉ से भाग जाने का निश्चय किया।

उसने बहुत धीरे धीरे इंच इंच कर के पेड़ पर से नीचे उतरना शुरू किया। अब उसका पैर जमीन से केवल एक फुट दूर ही रह गया था कि... वह चीता जो उस पर एक ऑख लगाये बैठा उसने उस पर कूद लगा दी।

बहादुर विकी डर के मारे बहुत ज़ोर से चीखा और अपनी पूरी कोशिश लगा कर अपनी छोटी छोटी टाँगों को डाल पर रख कर ताकि वह चीते से कूछ दूर रह सके लटक गया।

क्योंकि चीते का गुलाबी मुँह और सफेद चमकते दाँत उसके पैर के अँगूठे से केवल आधा इंच की दूरी पर थे सो वह उससे और ज़्यादा बचने की कोशिश करने लगा कि इस कोशिश में उसका खंजर म्यान में से निकल गया और सीधा चीते के गले में और फिर पेट में चला गया और चीता वहीं का वहीं मर गया।

बहादुर विकी तो अपनी इस खुशकिस्मती पर दंग रहा गया। फिर उसने उसके शरीर को एक डंडी मार कर देखना चाहा कि वह वाकई मर गया कि नहीं पर जब उसने देखा कि उसका शरीर तो हिल ही नहीं रहा तो उसे पक्का हो गया कि चीता वाकई में मर गया।

यह देख कर वह नीचे उतर आया उसका सिर काटा और अपनी जीत मनाता हुआ राजा के पास चला गया। वहाँ जा कर वह बहुत गुस्से से बोला — "आपके सारे सिपाही डरपोक हैं। मुझे देखिये मैं सात दिनों और सात रातों तक चीते से अकेला भूखा प्यासा लड़ता रहा जबकि आप सब लोग अपने अपने घरों में आराम से सोते रहे। यह बहुत बुरी बात है पर मुझे लगता है कि मेरे जैसा हीरो तो कोई है ही नहीं।"

इस तरह से छोटे विकी की शादी राजकुमारी से हो गयी।

अब इस राजा का एक पड़ोसी राजकुमार था जिसको इस राजा से बहुत शिकायत थी सो एक दिन वह इस राजा के ऊपर चढ़ाई करने आ पहुँचा और शहर के बाहर आ कर अपना डेरा डाल दिया। उसने कसम खायी कि वह उस शहर के हर आदमी औरत और बच्चे को अपनी तलवार से मौत के घाट उतार देगा।

यह सुन कर शहर का हर आदमी एक आवाज में चिल्लाया — "राजकुमार विक्टर राजकुमार विक्टर। मेहरबानी कर के हमारी सहायता करो।"

सो राजा ने राजकुमार विक्टर को हुक्म दिया कि वह शहर के बार जाये और दुश्मन राजा की सेना को नष्ट कर डाले। अगर उसने ऐसा कर दिया तो उसको राजा अपना आधा राज्य दे देगा।

बहादुर विकी जो अपनी इतनी शेखी बघारता था कोई बेवकूफ तो था नहीं। उसने सोचा "यह मामला तो दूसरे मामलों से बिल्कुल ही अलग है। एक आदमी एक मच्छर मार सकता है एक हाथी मार सकता है यहाँ तक कि एक शेर भी मार सकता है पर यह तो दुश्मन की इतनी बड़ी सेना है इसको मैं कैसे मार सकता हूँ।

नहीं नहीं। मैं आधा राज्य ले कर क्या करूँगा जब मेरे धड़ पर सिर ही नहीं होगा। इन हालातों में मैं हीरो बनने की कोशिश नहीं कर सकता। सो आधी रात को उसने अपनी पत्नी को उठाया और उससे सोने की थालियों को लेने के लिये और अपने साथ चलने के लिये कहा।

फिर उसने उससे बड़ी शेखी बघारते हुए कहा — "यह सब मैं तुमसे इसलिये ले जाने के लिये नहीं कह रहा कि इन थालियों की तुमको मेरे घर में जरूरत होगी बल्कि मैं इनको तुमसे इसलिये ले जाने के लिये कह रहा हूँ कि शायद इनकी हमें रास्ते में जरूरत पड़े।" इस तरह से वे दोनों आधी रात में शहर से बाहर चल दिये।

उनको दुश्मन के डेरों के बीच से हो कर जाना था। जैसे ही वे उनके डेरों के बीच से हो कर जा रहे थे कि बड़ी सी बीटिल उसके चेहरे पर लगी तो वह बहादुर विकी डर के मारे चिल्लाया "भागो भागो" और पीछे मुड़ कर अपने घर की तरफ भाग लिया और अपने कमरे में जा कर ही दम लिया। वह तुरन्त ही अपने पलंग के नीचे छिप गया।

यह सुन कर उसकी पत्नी के हाथ से उसके सोने के बरतनों की पोटली नीचे जमीन पर गिर गयी और वह उसको छोड़ कर उसके पीछे पीछे उसी की तरह से भाग ली। बर्तन जब नीचे गिरे तो बड़े ज़ोर से आवाज हुई जिससे डेरों में रह रहे सारे सिपाही जाग गये।

उनको लगा कि जिस राजा पर वे हमला करने आये थे उन्होंने उनके ऊपर हमला बोल दिया है सो वे अपने हथियार लेने के लिये भागे।

पर एक तो वे आधे सोये हुए थे दूसरे बिल्कुल घुप अँधेरा था सो वे दोस्त को दुश्मन से अलग नहीं कर सके वे आपस में ही एक दूसरे से ही बहुत ज़ोर से लड़ने लगे और इतने ज़ोर से लड़े कि सुबह

होने तक वे सब आपस में ही लड़ भिड़ कर मर गये। उनमें से कोई भी ज़िन्दा नहीं बचा।

अब यह तो सोचा जा सकता है कि जैसे ही यह खबर राजमहल में पहुँची चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ छा गयीं। राजकुमार विक्टर की ताकत की बड़ाई होने लगी।

राजकुमार विक्टर बड़ी सादगी से बोला — "यह तो बड़ी छोटी सी बात थी जब एक आदमी अपनी शटल से एक मच्छर मार सकता है तो बाकी की सारी चीज़ें तो उसके लिये खेल है।"

सो राजा ने अपने कहे अनुसार उसको अपना आधा राज्य दे दिया और उसने बड़ी शान से उस पर राज किया। इस लड़ाई के बाद उसने यह कहते हुए फिर कभी कोई लड़ाई नहीं लड़ी कि राजा लोग खुद कभी कोई लड़ाई नहीं लड़ते बल्कि दूसरों को लड़ने के लिये रख लेते हैं।

उसके बाद वह शान्ति से रहा और जब वह मरा तो सब लोगों ने कहा "हमने बहादुर विकी जैसा कोई हीरो नहीं देखा।"

3 जौन बालेन्टो[8]

तीस मार खाँ जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से चुनी है।

एक बार एक बहुत छोटे से शहर में एक चमार रहता था। वह बहुत पुराने पुराने जूते ठीक करता था। उसका नाम था जौन बालैन्टो। हालाँकि वह साइज़ में बहुत छोटा था पर अक्लमन्द बहुत था।

एक दिन जब वह एक जूता सिल रहा था तो गलती से जूता सिलने वाली सुई उसकी उँगली में चुभ गयी। उसके मुँह से एक चीख़ सी निकल गयी "उफ़।"

उसकी यह चीख़ उसके पड़ोसियों ने सुन तो ली पर उस पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने चिन्ता ही नहीं की जौन बालैन्टो को क्या हुआ।

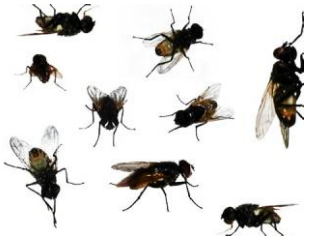

पर जौन बालैन्टो की चीखों ने वहाँ उड़ती हुई सारी मक्खियों की उत्सुकता जगा दी। वे तुरन्त ही उड़ कर जौन बालैन्टो के पास यह देखने के लिये आ गयीं कि उसको क्या हो गया।

[8] John Balento – a folktale from Italy from its Corsica area.
From the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of this book's 125 tales out of 200 tales is available from hindifolktales@gmail.com

उन मक्खियों में से एक मक्खी जौन बालैन्टो के घाव पर बैठ गयी और उसने उसके उस घाव से निकलता सारा खून चूस लिया। दूसरी मक्खी नूडिल्स[9] का एक कटोरा ले आयी और उसके ऊपर भिनभिनाने लगी।

जौन बोला — "अरे ये मक्खियाँ यहाँ क्या कर रही हैं। भागो भागो यहाँ से।" कह कर उसने चमड़े के एक टुकड़े से उनको उड़ाने की कोशिश की पर वे तो बहुत ही जिद्दी थीं। वे वहाँ से गयी नहीं। वे उस नूडिल्स के कटोरे के ऊपर भिनभिनाती ही रहीं।

जब वे वहाँ से नहीं गयी तो जौन बालैन्टो ने हाथ का घूँसा बना कर इतनी ज़ोर से उन मक्खियों को मारा कि उसके उस घूँसे से काफी मक्खियाँ मर गयीं।

उनको मार कर उसने जब जमीन पर पड़ी मरी हुई मक्खियाँ गिनी तो वे कम से कम **1000** तो होंगी। और **500** मक्खियों के करीब मक्खियाँ तो घायल भी हो गयी थीं।

उसने सोचा तो यह था मेरा एक ज़ोरदार घूँसा। लोग सोचते हैं कि मैं किसी काम का नहीं पर अगर मैं कोशिश करूँ तो मैं भी अपने आपको दिखा सकता हूँ कि मैं क्या हूँ।

[9] Noodles is an Italian dish. Noodles are like Indian Semiyaan, come in many lengths, but lot longer than Semiyaan. See its picture above.

फिर उसने एक सूखी हुई डंडी उठायी उसे स्याही में भिगोया और उससे एक कपड़े की बड़ी सी पट्टी पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा – "जौन बालैन्टो से मिलो जिसने अभी अभी **1000** मार दिये और **500** घायल कर दिये।"

उसने इस पट्टी को अपने टोप में लगा लिया जो वह उस समय पहने हुआ था। जिसने भी यह पढ़ा वही ज़ोर से हँस पड़ा और जौन से पूछा — "जौन कितने मारे?"

जौन बोला — "मैंने **1000** मारे और **500** घायल किये।"

इससे जौन बालैन्टो तो बहुत मशहूर हो गया। उसकी शोहरत एक मुँह से दूसरे मुँह तक होती हुई शहर भर में फैल गयी और फिर दूसरे शहरों में भी फैल गयी। एक साल के अन्दर अन्दर तो जौन बालैन्टो दूर दूर तक मशहूर हो गया।

इस बीच जौन ने अपना जूता सिलने का काम छोड़ दिया – जूते सिलने का धागा, चाकू, सुई आदि आदि सब उठा कर रख दिये और दूसरे देश में अपनी किस्मत आजमाने चल दिया।

वह एक बहुत ही पतले दुबले गधे पर चढ़ा जिसकी बस खाल और हड्डियाँ ही दिखायी दे रही थीं। न उसने अपने साथ कोई सामान लिया और न ही कोई पैसा बस वह तो चल दिया।

तीन दिन की जंगल की यात्रा के बाद वह एक सराय में आया। वह दरवाजे से ही चिल्लाया — "मैं जौन बालैन्टो हूँ जिसने **1000** मार दिये और **500** घायल कर दिये।"

इत्तफाक से वह सराय उस समय डाकुओं से भरी हुई थी। इतने बड़े हीरो का नाम सुन कर तो वहाँ रह रहे डाकू डर गये और तुरन्त ही उन्होंने अपने चमकते हुए हथियार और घोड़े तो वहीं छोड़े और सराय के दरवाजे और खिड़कियों से बाहर निकल कर चारों तरफ भाग गये।

जौन को अपने गधे से उतरने में थोड़ी देर लग गयी। गधे से उतर कर वह मेज पर पहुँचा तो सराय के मालिक ने कहा — "ओ बड़े आदमी, आइये और आप यहाँ पेट भर कर खाइये। मैं तो हमेशा आपका आभारी रहूँगा कि आपका नाम सुनते ही मेरी सराय से डाकू भाग गये।"

जौन बालैन्टो प्लेट की तरफ देखते हुए और खाना खाते हुए बोला — "दूसरे लोग तो मेरा जिस जिस तरीके से फायदा उठाते हैं उसके मुकाबले में यह तो कुछ भी नहीं है।"

जब जौन पेट भर कर खाना खा चुका तो उसने उन डाकुओं के घोड़ों में से सबसे बढ़िया घोड़ा लिया, उस पर सवार हुआ और सराय के मालिक से बोला — "अगर तुम्हें कभी भी किसी भी सहायता की जरूरत हो तो बस मुझे याद करना न भूलना।

जब तक मैं ज़िन्दा हूँ तब तक कोई भी तुमसे किसी भी तरह का कोई भी बुरा बर्ताव नहीं करेगा और करेगा भी तो बच कर नहीं जा सकता।"

कह कर उसने अपने घोड़े को एड़ लगायी और वहाँ से चल दिया। सराय के मालिक और उसके नौकरों के सिर उसके पीछे भी झुके के झुके रह गये।

जौन पहले कभी किसी घोड़े पर नहीं बैठा था इसलिये उसको घोड़े पर बैठना नहीं आता था। सो वह तो बस उस पर लटकता हुआ सा चला जा रहा था और उसके हर कदम पर हवा में कूद जाता था।

उसने सोचा — "ओ मेरे प्यारे औजारों, मैंने तुमको क्या सोच कर उठा कर रख दिया था?"

फिर भी वह उस पर चलता ही रहा और बाद में उस पर चढ़ने का आदी हो गया। वह जहाँ भी गया वहीं उसका बड़ी इज़्ज़त के साथ स्वागत हुआ।

आखिर वह एक बड़े साइज़ के आदमियों[10] के शहर में पहुँच गया। जैसे ही उन्होंने जौन को देखा तो वे बड़े साइज़ के आदमी जो चेस्टनट[11] के पेड़ जैसे मजबूत थे और चीड़ के पेड़ जैसे लम्बे थे अपने बहुत बड़े बड़े मुँह खोलते हुए और अपने होठ चाटते हुए उसकी तरफ उसको खाने के लिये दौड़े। जौन तो उनको देख कर पत्ते की तरह से काँप उठा।

[10] Translated for the word "Giants"

[11] Chestnut is a kind of nut whose fruit and the tree is shown in the picture above.

बड़े साइज़ के आदमियों का सरदार बोला — "तो तुम्हीं वह जौन बालैन्टो हो जिसने **1000** मार दिये और **500** घायल कर दिये। क्या तुम मुझसे लड़ना पसन्द करोगे? चलो नदी के उस पार चलो उधर चल कर लड़ते हैं।"

जौन बोला — "सुनो सुनो। अच्छा हो कि अगर तुम मुझे शान्ति से मेरे रास्ते जाने दो। तुम्हें मालूम है कि मैं कैसा हूँ।

जैसे मिर्च को ही ले लो। मिर्च कितनी छोटी सी होती है पर बहुत ताकतवर होती है उसी तरह से मैं हूँ। मैं अगर एक बार अपनी तलवार छू दूँ तो बस फिर तुम्हें भगवान ही बचाये।"

यह सुन कर बड़े साइज़ वाले आदमियों ने इस पर विचार किया और फिर ज़रा नर्म आवाज में बोले — "ठीक है ठीक है। हम तुम्हें तुम्हारे रास्ते जाने देंगे पर पहले तुम अपनी ताकत हमें साबित कर के दिखाओ।

क्या तुम वह चट्टान वहाँ देख रहे हो? हम यह चाहते हैं कि तुम उस चट्टान को लुढ़का कर यहाँ ले आओ। अगर तुमने यह कर दिया तो हम तुमको अपना राजा बना लेंगे।"

जौन बालैन्टो ने अपने दोनों हाथों का एक प्याला बना कर अपने मुँह पर रखा और चिल्ला कर बोला — "रास्ते से हट जाओ। इस घाटी में हर रहने वाला अपनी जान बचा कर भागे। शानदार जौन बालैन्टो अब इस बड़ी चट्टान को हिलाने वाला है जिससे कि

लोग मर भी सकते हैं। भागो भागो हर आदमी भागो। अपनी जान बचा कर भागो।"

यह सुन कर उस घाटी में रहने वाले सारे लोग बेचारे अपने अपने परिवारों को ले कर वहाँ से भागने लगे।

जब इतने सारे लोग वहाँ से भागे तो बड़े साइज़ के लोग भी डर गये और वे भी वहाँ से भाग लिये। तुरन्त ही वहाँ से सारे लोग भाग रहे थे। भागते भागते वे चिल्लाते भी जा रहे थे —

"जौन बालैन्टो को देखो उसने **1000** मार दिये हैं और **500** घायल कर दिये हैं।"

देखते देखते सारा गाँव खाली हो गया। जब सारे लोग वहाँ से भाग गये तो जौन ने अपने घोड़े को ऐड़ लगायी, नदी पार की और शान्ति से उन बड़े साइज़ के आदमियों की जगह पार कर के वहाँ से चला गया।

अब चट्टान को तो वहाँ से न हिलना था और वह न हिली। पर ऐसे कामों से उसकी शोहरत बढ़ती ही गयी बढ़ती ही गयी।

कुछ दूर जाने के बाद उसको दो सेनाऐं मिलीं जो आपस में लड़ने के लिये तैयार खड़ी थीं। राजा वहाँ अपने जनरलों से घिरा खड़ा था पर वह लड़ाई के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था।

क्योंकि अगर वह हार गया तो उसको अपना राज्य और ताज छोड़ना पड़ता और मरना पड़ता और यह वह करना नहीं चाहता था। इसलिये वह बहुत डरा हुआ था।

पर जैसे ही उसने जौन बालैन्टो को देखा तो उसको कुछ उम्मीद बँधी। उसने जौन से कहा — "ओ मशहूर जौन बालैन्टो। लगता है कि तुमको भगवान ने मेरी जीत के लिये ही इस समय यहाँ भेज दिया। मेहरबानी कर के तुम मेरी सेना को सँभाल लो।"

अब जौन को लगा कि अब झूठ से काम नहीं चलने का, अब सच बोलने का समय आ गया सो वह बोला — "मैजेस्टी, मैं वह आदमी नहीं हूँ जो आप समझ रहे हैं। मैं तो एक गरीब चमार हूँ। मैं तो केवल अपने जूते में इस्तेमाल करने वाली सुई और धागा ही इस्तेमाल कर सकता हूँ।"

राजा ने उसे बीच में ही टोका — "हाँ हाँ सुन लिया। पर क्या हम ये बातें बाद में कर सकते हैं। अभी हमारे पास समय कम है। तुम हमारे जनरल का पद सँभालो और मेरी इस सेना को ले कर लड़ाई के लिये चलो।

यह रहा मेरा घोड़ा। लड़ाई के लिये बिल्कुल तैयार है। और यह है मेरा जिरहबख्तर[12] और यह रही मेरी तलवार।"

जौन के काफी मना करने के बावजूद राजा ने उसको लड़ाई की पोशाक पहनायी और उसको अपने घोड़े पर बिठा दिया। उसके बैठते ही राजा का घोड़ा तो वहाँ से भाग लिया।

[12] Translated for the word "Armor". It is normally worn in war and figting to save oneself from other's weapons' wounds.

जनरल को दुश्मन की सेना की तरफ जाते देख कर राजा के दूसरे सिपाही भी उत्साहपूर्वक उसके पीछे पीछे भाग लिये और कुछ ही देर में उन्होंने दुश्मनों की सेना का सफाया कर दिया।

राजा जीत गया तो सिपाहियों ने राजा की जीत की खुशियाँ मनानी शुरू कर दीं। पर जनरल का तो कहीं पता ही नहीं था। वह कहाँ गया? ढूँढने पर उनको वह चार लीग[13] दूर मिला।

वह दुश्मनों की सेना में से हो कर तेज़ी से भाग गया था। फिर राजा की अपनी सेना के घुड़सवार उसे ढूँढ कर राजा के पास ले कर आये।

जौन ने राजा के सामने कृतज्ञता से सिर झुकाते हुए कहा — "अगर आप लोग मेरे साथ आते तो हम लोगों ने अब तक तीन राज्य और तीन ताज जीत लिये होते। खैर अब हमने यह लडाई तो जीत ही ली है सो अब हमें इसी से सन्तुष्ट रहना चाहिये।"

राजा आश्चर्य से बोला — "क्या? क्या तुम अभी और भी लड़ाई के लिये जाना चाहते हो? मैं तो तुम्हारे साथ अपनी बेटी की शादी करने की सोच रहा हूँ।"

पर जौन किसी के बहकावे में आने वाला नहीं था। वह अपने उस काम के लिये कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाह रहा था। वह राजा का सब कुछ छोड़ कर अपने रास्ते चल दिया।

[13] League is an obsolete unit to measure length. It is approximately an hour's walk. Its measurement was different in different countries. Now it is not used anywhere in the world.

काफी दूर जाने के बाद वह अमेज़नों[14] के राज्य में आ गया। जैसा कि सब जानते हैं कि अमेज़न की स्त्रियाँ बहुत अच्छी लड़ने वाली होती हैं। उनका अपना राज्य है जिसको एक रानी चलाती है।

उनके राज्य में किसी आदमी को रहने की इजाज़त नहीं है। अगर कोई आदमी उनको अपने राज्य में दिखायी दे जाता है तो वे उसके टुकड़े टुकड़े कर डालती हैं और उनको कुत्तों को खिला देती हैं और उसकी खाल के ढोल बना लेती हैं।

अमेज़न राज्य की रानी एक बहुत ही बेरहम स्त्री थी। वह अपनी पूरी ज़िन्दगी में हँसना तो दूर कभी मुस्कुरायी भी नहीं थी। और जौन बालैन्टो अब ऐसी ही स्त्रियों के बीच में था।

जैसे ही उन्होंने उसको देखा तो उन सबने मिल कर उसको पकड़ लिया और जंजीरों से बाँध कर घसीटते हुए रानी के सामने ले गयीं। अमेज़न के दरबार में बहुत सारे घोड़े थे सो उसका दरबार मक्खियों से भरा हुआ था।

वे सब घोड़े अपनी अपनी पूँछें हिला कर अपनी मक्खियाँ भगा रहे थे और वहाँ बैठीं अमेज़न स्त्रियाँ पंखा झल झल कर अपनी मक्खियाँ उड़ा रही थीं। पर जौन जो जंजीरों से बँधा हुआ था हिल भी नहीं सकता था और उसके ऊपर बहुत सारी मक्खियाँ बैठी हुई थीं।

[14] Amazon

रानी बोली — "बस अब तुम अपने आपको मरा हुआ ही समझो क्योंकि हमारा यही कानून है कि जो भी आदमी हमारे राज्य में आ जाता है हम उसे मार देते हैं। तुम हमारे राज्य में घुसे ही क्यों?"

जौन ने मुँह लटकाते हुए अपने आपसे कहा "ओ मेरे जूते में छेद करने वाले सूए, ओ मेरे धागे, ओ मेरी बैन्च, अगर मैं तुम्हारे साथ ही रहता तो आज मेरी यह हालत न होती।"

रानी ने अपनी बात जारी रखते हुए आगे कहा — "और सुनो, मुझे एक गरीब आदमी को मारना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। वह मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी कुत्ते को मार रही हूँ। तुम मुझे सच सच बता दो कि तुम कौन हो तो मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बख्श दूँगी। क्या तुमने वाकई **1000** मारे और **500** घायल किये?"

जौन तुरन्त ही बोला — "एक ही झटके में, योर मैजेस्टी।"

"यह तुमने कैसे किया?"

"आप मेरी जंजीरें खोल दें तो मैं आपको दिखा दूँ।"

रानी ने हुक्म दिया कि उसकी जंजीरें खोल दी जायें। रानी के हुक्म का पालन किया गया। उसकी जंजीरें खोल दी गयीं। उसके चारों तरफ जो घुड़सवार स्त्रियाँ खड़ी थी वे सब उसकी तरफ देखने लगीं।

दरबार में बिल्कुल शान्ति थी। एक भी आवाज सुनायी नहीं दे रही थी सिवाय घोड़ों की पूँछों के हिलने की, पंखा झलने की और मक्खियों के उड़ने की आवाज के।

जौन ने कहा — "पहले मैंने कैसे किया था। ऐसे।" कह कर उसने अपने हाथ की मुट्ठी बाँधी और उसको अपने चारों तरफ भिनभिनाती मक्खियों के बीच में घुमा दिया और उन सब मक्खियों को मार दिया।

फिर वह बोला — "अब इनको गिनो।"

"ओह तो वे मक्खियाँ थीं। ओह मेरे भगवान।" कह कर घोड़ों पर बैठी सारी अमेज़न स्त्रियाँ बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं। हँसते हँसते उनके शरीर में बल पड़ गये। पर सबसे ज़्यादा ज़ोर से जो हँसी वह थी वहाँ की रानी।

"हा हा हा हा। मैं तो अपनी ज़िन्दगी भर में कभी इतना नहीं हँसी जितना मैं अभी हँसी। जौन बालैन्टो, तुम मेरी सारी ज़िन्दगी में वह पहले आदमी हो जिसने मुझे हँसाया है। और तुम्हारी इस मक्खियाँ मारने की तरकीब से तो तुम मेरे राज्य में भगवान के भेजे हुए दूत हो। अब तुम यहीं रहो और मेरे पति बन जाओ।"

सो उस जौन बालैन्टो की शादी अमेज़न की रानी से हो गयी और वह चमार अमेज़न राज्य का राजा बन गया। बहुत दिनों तक उन दोनों की शादी की खुशियाँ मनायी जाती रहीं।

4 बहादुर छोटा दर्जी[15]

एक गर्मी की सुबह एक छोटा दर्जी अपनी खिड़की के पास मेज पर बैठा हुआ था। वह बहुत खुश था और अपना सिलाई का काम जल्दी जल्दी कर रहा था कि एक किसान स्त्री सड़क पर आवाज लगाती आयी — "जैम ले लो। जैम ले लो। बढ़िया जैम ले लो।"

छोटे दर्जी को वह अच्छा लगा सो उसने अपना छोटा सा सिर बाहर निकाला और उस स्त्री से कहा — "यहाँ आओ। क्या तुम मुझे अपना जैम बेचोगी?"

स्त्री अपनी भारी टोकरी ले कर तीन मंजिल चढ़ कर दर्जी के पास आयी। दर्जी ने उसकी सारी शीशियाँ उस टोकरी में से निकलवायीं और उनको सबको खोल खोल कर और सूँघ सूँघ कर देखा।

अन्त में उसने एक शीशी सूँघ कर कहा — "मुझे यह जैम अच्छा लगा इसमें से मुझे चार औंस तौल दो चाहे वह चौथाई पौंड ही क्यों न हो।"

स्त्री ने यह सोचते हुए कि यहाँ उसकी कुछ अच्छी बिक्री हो जायेगी उसने जो माँगा था वह उसको दे दिया। फिर वह वहाँ से गुस्से में बड़बड़ाती चली गयी।

---

[15] The Brave Little Tailor. By Grimms Brothers. Tale No 20. Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/grimm020.html . This translation is based on his version of 1857. First it was published in 1810.

छोटे दर्जी ने कहा — "भगवान करे यह जैम मुझे तन्दुरुस्ती दे।" कह कर उसने आलमारी में एक डबलरोटी निकाली उसमें से एक बड़ा सा टुकड़ा काटा उस पर जैम लगाया और बोला — "यह जैम तो बुरा नहीं है पर पहले मैं यह जैकेट खत्म कर लूँ तब इसे खाऊँगा।"

कह कर उसने वह डबलरोटी का टुकड़ा तो एक तरफ को रख दिया और जैकेट में लम्बे लम्बे टाँके भरने शुरू कर दिये। इस बीच जैम की खुशबू दीवार के उस पार पहुँच गयी जहाँ बहुत सारी मक्खियाँ बैठी हुई थीं।

जैम की खुशबू से आकर्षित हो कर वे मक्खियाँ वहाँ से उठ कर डबलरोटी के ऊपर लगे जैम पर बैठ गयीं। बिन बुलाये मेहमानों को झिड़कते हुए दर्जी बोला — "ए तुम लोगों को यहाँ किसने बुलाया।"

वे मक्खियाँ शायद जर्मन नहीं समझती थीं सो वे वहाँ से नहीं गयीं बल्कि और ज़्यादा संख्या में वहाँ आने लगीं। जब कई बार कहने पर भी वे वहाँ से नहीं गयीं तो गुस्से में आ कर उसने कपड़े का एक टुकड़ा उठाया और बोला — "ज़रा रुक जाओ देखो मैं तुम्हें अभी क्या देने वाला हूँ।"

कह कर उसने बड़ी निर्दयतापूर्वक उन मक्खियों को मारा। जब उसने उनको गिना तो वे कम से कम सात से कम तो नहीं थीं जो उसके सामने मरी पड़ी थीं। उनकी टाँगें फैली पड़ी थीं।

उसने अपनी बहादुरी पर आश्चर्य करते हुए अपने आपसे कहा "वाह तुम भी कोई चीज़ हो। अब इस बात को सारा शहर सुनेगा।" उसने जल्दी से अपने लिये एक झंडा बनाया और उस पर सुन्दर बड़े अक्षरों में कढ़ाई की "एक वार में सात मारे"।

वह आगे बोला — "शहर ही नहीं बल्कि सारी दुनियाँ इसे सुनेगी।" और उसकी आँखें मेमने की पूँछ की तरह से नाचने लगीं।

दर्जी ने वह झंडा अपने शरीर के चारों तरफ बाँध लिया और दुनियाँ में निकल पड़ा। क्योंकि उसको लगा कि उसकी इतनी बड़ी बहादुरी के लिये उसका यह कमरा बहुत छोटा है।

घर छोड़ने से पहले घर में चारों तरफ देखा कि वहाँ से वह क्या ले जा सकता था। उसको सिवाय चीज़ के एक छोटे से टुकड़े के वहाँ और कुछ दिखायी नहीं दिया। सो उसने उसे अपनी जेब में रखा और चल दिया।

शहर के फाटक के बाहर उसको एक चिड़िया दिखायी दी जो एक झाड़ी में फँसी पड़ी थी। उसको भी उसने चीज़ के साथ साथ अपनी जेब में रख लिया। वह बहादुरी से सड़क पर चल रहा था। क्योंकि वह पतला दुबला था इसलिये वह थका भी नहीं।

उस सड़क पर चलते चलते वह एक पहाड़ पर पहुँच गया। जब वह उसकी चोटी पर पहुँचा तो उसने देखा कि एक बड़े साइज़ का आदमी[16] बैठा हुआ था और आराम से इधर उधर देख रहा था।

[16] Translated for the word "Giant"

छोटा दर्जी खुशी खुशी उसके पास गया और बोला — "गुड डे साथी। क्या तुम यहाँ बैठे बैठे दुनियाँ देख रहे हो? मैं अपने आपको दिखाने के लिये बाहर निकला हूँ। क्या तुम मेरे साथ चलोगे?"

बड़े साइज़ के आदमी ने दर्जी की तरफ देखा और बोला — "ओह नीच ओ दुखी आदमी।"

दर्जी बोला — "तुम ऐसा मत कहो।" कह कर उसने अपने कोट के बटन खोले और उसे अपने शरीर पर लिपटा हुआ झंडा दिखाया और कहा — "तुम यह पढ़ कर पता लगा सकते हो कि मैं किस तरह का आदमी हूँ।"

बड़े साइज़ के आदमी ने पढ़ा — "एक वार में सात मारे"।

यह पढ़ कर उसने सोचा कि इस दर्जी ने तो एक ही वार में सात आदमी मार डाले। सो उसके दिल में उस दर्जी के लिये इज़्ज़त बढ़ गयी।

पर फिर भी वह उसका एक इम्तिहान लेना चाहता था। सो उसने अपने हाथ में एक पत्थर उठाया और उसको इतना दबाया कि उसमें से पानी निकलने लगा।

यह कर के बड़े साइज़ का आदमी बोला — "अगर तुम्हारे अन्दर ताकत हो तो अब तुम इसे कर के दिखाओ।"

दर्जी बोला — "बस इतनी सी बात। यह तो मेरे जैसे के लिये बच्चों का खेल है।"

कहते हुए उसने अपनी जेब में हाथ डाला चीज़ का एक छोटा सा टुकड़ा निकाला और उसको तब तक दबाये रखा जब तक कि उसमें से पानी नहीं बह निकला। फिर बोला — "यह तो तुम्हारे काम से ज़्यादा अच्छा काम था। है न?"

बड़े साइज़ के आदमी को तो पता ही नहीं कि वह क्या कहे। क्योंकि उसको अभी भी छोटे आदमी पर कोई भरोसा नहीं था। उसके बाद बड़े साइज़ के आदमी ने एक पत्थर उठाया और ऊपर की तरफ इतना ऊँचा फेंका कि वह तो कहाँ तक गया यही पता नहीं चला। फिर उसने छोटे आदमी से कहा "अब तुम फेंको।"

छोटे दर्जी ने कहा — "यह तो तुमने बहुत अच्छा फेंका पर वह पत्थर तो वापस नीचे आ गया। मैं तो एक ऐसी चीज़ फेंकूँगा जो फिर वापस ही न आये।"

उसने अपनी जेब में हाथ डाला चिड़िया निकाली और ऊपर उड़ा दी। चिड़िया तो उड़ गयी और वापस नहीं आयी। छोटे दर्जी ने पूछा — "साथी कैसी रही?"

बड़े साइज़ का आदमी बोला — "तुम तो बहुत अच्छा फेंकते हो। पर अब देखते हैं कि तुम कोई ठीक सी चीज़ ले कर जा सकते हो या नहीं।

वह छोटे दर्जी को एक बहुत ही बड़े ओक के पेड़ के पास ले गया जिसे लोगों ने काट दिया था और वह वहीं पड़ा हुआ था।

अगर तुम्हारे अन्दर ताकत है तो तुम मेरे साथ इस पेड़ को जंगल के बाहर ले जाने में मेरी सहायता करो।"

छोटा आदमी बोला — "खुशी से। तुम इस पेड़ का तना अपने कन्धों पर उठा लो मैं इसकी शाखाऐं और छोटी छोटी डंडियाँ ले चलता हूँ क्योंकि वे तो बहुत सारी और भारी हैं।"

बड़े साइज़ के आदमी ने पेड़ा का तना उठा लिया और दर्जी पीछे उसकी एक शाख पर बैठ गया। अब बड़े साइज़ का आदमी दर्जी को देख नहीं सकता था। बड़े साइज़ के आदमी को पूरा का पूरा पेड़ खींचना पड़ रहा था। वह दर्जी को बिठा कर पेड़ खींचता ले जा रहा था।

जब बड़े साइज़ के आदमी ने उस पेड़ को कुछ दूर तक खींच लिया तब वह चिल्ला कर बोला — "अब मैं इसको कुछ देर के लिये नीचे रखता हूँ।"

यह सुन कर दर्जी बिना कोई शोर किये शाख से कूद गया और खुश खुश दोनों हाथों से पेड़ पकड़ लिया। जैसे वही पेड़ को पकड़ कर ला रहा हो। वह सीटी बजा कर यह गाना गाने लगा —

तीन दर्जी थे जो गेट के बाहर की तरफ जा रहे थे

ऐसा लग रहा था कि इतना बड़ा बोझ ले कर जाना उसके लिये सचमुच बच्चों का खेल था। उसने बड़े साइज़ के आदमी से कहा —

"अरे तुम तो इतने ताकतवर हो फिर भी तुम अकेले इतने छोटे से पेड़ को नहीं उठा सकते?"

फिर वे चले तो एक चैरी के पेड़ के पास आये। बड़े साइज़ के आदमी ने चैरी के पेड़ का ऊपर का हिस्सा पकड़ा जहाँ पके पके फल लगे हुए थे उसे नीचे झुकाया और दर्जी को पकड़ा कर उससे चैरी खाने के लिये कहा।

दर्जी बेचारा इतना कमजोर था कि वह पेड़ को ठीक से नहीं पकड़ पाया सो जैसे ही आदमी ने उसे दर्जी के हाथ में दे कर छोड़ा वे शाखें उसके हाथों से तो छूट गयीं और वापिस ऊपर चली गयीं और उनके साथ साथ ऊपर चला गया दर्जी भी।

जब दर्जी नीचे गिरा तो उसे चोट नहीं लगी। बड़े साइज़ के आदमी ने पूछा — "अरे तुम्हारे अन्दर तो इतनी भी ताकत नहीं कि तुम वह डाली पकड़ सकते।"

दर्जी बोला — "मेरे अन्दर ताकत की कोई कमी नहीं है। तुम्हें क्या लगता है कि जिसने एक बार में सात मारे हों उसके लिये यह कोई बड़ी बात है? मैं तो पेड़ के ऊपर केवल इसलिये गया था क्योंकि नीचे शिकारी लोग झाड़ियों में शिकार कर रहे थे। अगर तुम कूद सकते हो तो तुम भी उसके ऊपर कूद जाओ।"

बड़े साइज़ के आदमी ने कोशिश की पर वह उस पेड़ को पार नहीं कर सका और उसकी शाखाओं में अटक गया। इस तरह से छोटा दर्जी यहाँ भी जीत गया।

बड़े साइज़ का आदमी बोला — "अगर तुम इतने ही बहादुर हो तो मेरे साथ मेरी गुफा में आओ और वहीं सो जाना।"

छोटा दर्जी इसके लिये भी तैयार हो गया और उसके पीछे पीछे चलने लगा। जब वे लोग गुफा में पहुँचे तो वहाँ और कई बड़े साइज़ के लोग बैठे हुए थे। हर एक के हाथ में एक एक भुनी हुई भेड़ लगी हुई थी और वह उसमें से खा रहा था।

छोटे दर्जी ने गुफा में इधर उधर देखा तो उसको लगा कि "अरे यह तो मेरे काम करने की जगह से बहुत बड़ी जगह है।"

बड़े साइज़ के आदमी ने उसको उसका बिस्तर दिखाया और उससे कहा कि वह वहाँ जा कर लेट जाये और सो जाये। छोटे दर्जी को वह बिस्तर बहुत बड़ा लगा सो वह उस बिस्तर पर लेटने की बजाय एक कोने में जा कर लेट गया।

आधी रात को बड़े साइज़ के आदमी ने सोचा कि अब तो दर्जी सो गया होगा सो वह उठा और उसने एक बहुत बड़ा और भारी लोहे का डंडा उठाया और एक ही वार में उसका पलंग दो में तोड़ दिया। उसने सोचा कि उसने एक टिड्डे का अन्त कर डाला।

अगले दिन सुबह सवेरे ही सारे बड़े साइज़ के आदमी जंगल चले गये। तब वह छोटे दर्जी को भूल ही गये थे। सो वह बड़ी

बहादुरी और खुशी खुशी अचानक ही जंगल पहुँचा। उसको देख कर सब बड़े साइज़ के लोग डर गये कि वह उनको सबको जल्दी ही मार देगा सो वे सब वहाँ से बहुत जल्दी ही भाग गये।

छोटा दर्जी अपने रास्ते पर चलता रहा – सीधा अपनी नाक की सीध में।

बहुत देर तक घूमने के बाद वह एक शाही महल के आँगन में आ पहुँचा। वह बहुत थक गया था सो वह वहीं घास पर लेट गया और सो गया। जब वह वहाँ लेटा हुआ था तो लोग वहाँ आये और उसे चारों तरफ से देखने लगे। उन्होंने उसका झंडा पढ़ा "एक वार में सात मारे।"

तो उन्होंने आपस में कहा —"अरे यह तो बहुत बड़ा हीरो है। यह यहाँ शान्ति में क्या कर रहा है। यह तो एक बहुत ही ताकतवर लौर्ड होना चाहिये।"

उन्होंने यह सोचते हुए कि अगर कभी युद्ध छिड़ा तो यह एक ताकतवर और काम का आदमी हो सकता है इसको किसी भी कीमत पर कहीं और नहीं जाने देना चाहिये। उन्होंने जा कर राजा को खबर दी।

राजा उनकी इस सलाह से बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही अपने एक दरबारी को जैसे ही छोटा दर्जी जागे उसे लाने के लिये भेजा ताकि वह उसे अपनी सेना में अच्छी जगह दे सके।

दूत सोते हुए दर्जी के पास खड़ा रहा और उसके जागने का इन्तजार करता रहा। जब वह अपने हाथ पैर फैला कर उठ गया तब उसने उसे राजा का सन्देश दिया।

छोटा दर्जी बोला कि वह वहाँ इसी लिये तो आया है। वह बोला — "मैं राजा की सेवा करने के लिये तैयार हूँ।"

इस तरह उसका वहाँ बहुत अच्छा स्वागत हुआ और रहने के लिये उसे एक खास जगह दे दी गयी। पर सिपाही लोग दर्जी के खिलाफ थे और चाहते थे कि वह उनसे हजारों मील दूर ही रहे।

वे आपस में कहते "अगर हम उससे झगड़ेंगे तो वह तो हमें ही मार डालेगा। वह तो हम सात को एक ही वार में मार देगा। हम जैसे लोग तो उसके सामने तो खड़े ही नहीं हो सकते।"

सो उन लोगों ने कुछ निश्चय किया और सब लोग मिल कर राजा के पास गये और उनसे छुट्टी माँगी कि "हम ऐसे आदमी के लिये नहीं बनाये गये जो एक ही वार में सात को मार दे।"

राजा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ कि केवल एक आदमी की वजह से उसके सारे वफादार नौकर जा रहे थे। उसने सोचा कि काश उसने कभी उसे देखा ही नहीं होता।

वह उससे छुटकारा पाना चाहता था पर उसको निकालने से डरता था। क्योंकि वह सोचता था कि कहीं वह उसे और उसके सारे आदमियों को मार कर उसकी राज गद्दी पर न बैठ जाये।

बहुत देर तक सोचने के बाद राजा को एक तरकीब समझ आ गयी। उसने छोटे दर्जी को एक सन्देश भेजा कि "क्योंकि वह एक बहुत बड़ा योद्धा है इसलिये वह उसके लिये एक प्रस्ताव भेज रहा है। उसके देश के एक जंगल में दो बड़े साइज़ के लोग रहते थे जो डाका डाल कर लोगों को मार कर और उन्हें मार पीट कर शहर को बहुत नुकसान पहुँचा रहे थे।

कोई भी आदमी उनका सामना करने में डरता था क्योंकि इससे उसकी जान को खतरा था। अगर वह इन दोनों बड़े साइज़ के लोगों को मार देगा तो राजा उससे अपनी बेटी की शादी कर देगा और दहेज में अपना आधा राज्य दे देगा। इसके अलावा इस काम के लिये उसके साथ **100** घुड़सवार भी भेजेगा।"

छोटे दर्जी ने सोचा "यह हुई न कुछ बात तुम्हारे जैसे आदमी के लिये। ऐसा कोई रोज रोज थोड़े ही होता है कि कोई अपनी बेटी की शादी भी करे और साथ में अपना आधा राज्य भी दहेज में दे दे।"

उसने जवाब दिया — "हाँ मैं यह जरूर करूँगा। और मुझे तुम्हारे **100** घुड़सवारों की भी जरूरत नहीं है। मैं अकेला ही उनके लिये काफी हूँ। जो सात को एक ही वार में मार सकता है उसको दो से डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

छोटा दर्जी बड़े साइज़ के लोगों को मारने के लिये चल दिया। **100** घुड़सवार उसके पीछे जा रहे थे। जब वे जंगल के किनारे

पहुँचे तो दर्जी ने घुड़सवारों को वहीं रुक जाने के लिये कहा। उसने उनसे कहा कि वे वहीं रुकें और वह अकेला ही उनको देख लेगा।

कह कर वह कूदता हुआ जंगल में चला गया। उसने इधर देखा उधर देखा तो जल्दी ही ही उसे दोनों बड़े साइज़ के लोग दिखायी दे गये। वे दोनों एक पेड़ के नीचे सो रहे थे। उनके खर्राटों से पेड़ की डालियाँ ऊपर नीचे हिल रही थीं।

छोटा दर्जी कोई आलसी तो था नहीं सो उसने अपनी दोनों जेबें पत्थरों से भर लीं और पेड़ पर चढ़ गया। जब वह पेड़ के बीच तक चढ़ गया तो वह पेड़ की एक ऐसी टहनी पर बैठ गया जो उन दोनों के ऊपर तक जाती थी।

वहाँ से उसने एक एक कर के पत्थए एक बड़े साइज़ के आदमी की छाती पर फेंकने शुरू कर दिये। काफी देर तक तो उसको कुछ महसूस ही नहीं हुआ पर आखिर वह उठ ही गया और अपने साथी से बोला — "तुम मुझे क्यों मार रहे हो?"

दूसरा बोला — "तुम सपना देख रहे होगे। मैं नहीं मार रहा तुम्हें।"

वे दोनों फिर सो गये। तो दर्जी ने अबकी बार दूसरे आदमी की छाती पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। सो दूसरा बोला — "यह क्या है। तुम मुझे पत्थर क्यों मार रहे हो?"

पहला वाला बोला — "मैं तुम्हारे ऊपर पत्थर नहीं फेंक रहा।"

कुछ देर तक तो वे लड़ते रहे पर क्योंकि वे थके हुए थे इसलिये फिर आपस में सुलह कर ली। उन्होंने फिर से अपनी आँखें बन्द कर लीं।

छोटे दर्जी ने अपना खेल फिर से शुरू कर दिया। अबकी बार उसने आपने पास से अपना सबसे बड़ा पत्थर निकाला और उसे पहले आदमी के सीने पर बहुत जोर से मारा। वह आदमी चिल्लाया — "यह बहुत बुरी बात है।"

फिर वह पहला आदमी एक पागल की तरह से दूसरे आदमी पर कूद पड़ा और उसे पेड़ की तरफ धकेला जब तक कि पेड़ हिल नहीं गया। दोनों आपस में एक दूसरे से इतना गुस्सा हुए कि दोनों ने पेड़ तोड़ लिये और उनसे एक दूसरे को मार मार कर लड़ने लगे जब तक कि दोनों मर नहीं गये।

उसके बाद छोटा दर्जी नीचे उतर आया और बोला — "यह बड़ा अच्छा रहा कि इन लोगों ने यह वाला पेड़ नहीं उखाड़ा जिस पर मैं बैठा हुआ था नहीं तो मुझे गिलहरी की तरह से इस पेड़ से उस पेड़ पर फुदकते रहना पड़ता। पर मेरे जैसे लोग भी तो तेज़ होते हैं।"

फिर उसने अपनी तलवार निकाली और दोनों की छाती में एक एक बार घुसा दी। उसके बाद वह घुड़सवारों के पास लौट गया।

उनसे जा कर बोला — "काम हो गया। मैंने उन दोनों को खत्म कर दिया। पर यह काम बहुत मुश्किल था। अपने को बचाने

की जरूरत पड़ने पर उन्होंने बहुत सारे पेड़ उखाड़े पर उनसे उनको कोई फायदा नहीं हुआ क्योंकि वे मुझसे लड़ रहे थे जिसने सात को एक ही वार में मार डाला।"

घुड़सवारों ने पूछा — "आप तो घायल नहीं हुए।"

दर्जी बोला — "सब ठीक है। वे मेरा एक बाल भी बाँका नहीं कर सके।"

घुड़सवारों को यकीन नहीं हुआ तो वे जंगल की तरफ चल दिये। वहाँ उन्होंने देखा कि वे तो अपने ही खून के तालाब में डूबे पड़े थे और उनके चारों तरफ टूटे पेड़ पड़े हुए थे।

छोटे दर्जी ने फिर अपना इनाम माँगा पर राजा ने कहा "अभी नहीं।" और उसने फिर से उससे अपनी गर्दन बचाने की तरकीब सोचनी शुरू कर दी।

उसने कहा — "इससे पहले कि मैं तुम्हारे साथ अपनी बेटी की शादी करूँ और तुम्हें अपना आधा राज्य दूँ तुमको मेरा एक और बहादुरी का काम करना होगा। जंगलों में एक गेंडा[17] है जिसने बहुत उत्पात मचा रखा है। पहले तुम्हें उसे पकड़ना पड़ेगा।"

"मैं थोड़ा बहुत बड़े साइज़ के लोगों से तो डर रहा था पर मुझे गेंडे से तो बिल्कुल ही डर नहीं लगता – सात केवल एक ही वार में। यही मेरा नारा है।"

[17] Translated for the word "Unicorn" – with one horn

उसने एक रस्सी और एक कुल्हाड़ी उठायी और जंगलों की तरफ चल दिया। पिछली बार की तरह से उसने इस बार भी अपने साथ आने वालों को जंगल के बाहर ही रोक दिया।

उसको गेंडे को बहुत देर तक नहीं ढूँढना पड़ा। जल्दी ही वह दर्जी की तरफ कूदता हुआ बढ़ने लगा जैसे कि वह दर्जी को फाड़ खा जाना चाहता हो।

दर्जी बोला — "आराम से आराम से। इतनी जल्दी नहीं।"

दर्जी रुक गया और उस जानवर के पास आने का इन्तजार करने लगा। जैसे ही वह उसके पास आया तो वह तेज़ी से पेड़ के पीछे चला गया।

गेंडा भागा हुआ आ रहा था। वह पेड़ से टकरा गया। उसका सींग इतनी ज़ोर से पेड़ के अन्दर घुस गया कि उसके पास इतनी ताकत नहीं थी कि वह उसे पेड़ के तने में से खींच सके।

और इस तरह से उसे पकड़ लिया गया।

अब दर्जी बोला — "अब मेरे पास यह छोटी चिड़िया है।" कहता हुआ वह पेड़ के पीछे से निकल आया।

पहले उसने अपनी रस्सी उसी गर्दन में डाली। फिर उसने कुल्हाड़ी से पेड़ से उसका सींग अलग किया। जब सब कुछ तैयार हो गया तब वह जानवर को ले कर राजा के पास चल दिया।

पर राजा अभी भी उससे अपनी बेटी की शादी करने के तैयार नहीं था और न ही उसे अपना आधा राज्य देने को तैयार था।

उसने एक तीसरी माँग और रखी। अबकी बार उसे एक जंगली सूअर पकड़ना था जो उसके जंगलों को बहुत नुकसान पहुँचा रहा था। बहुत सारे शिकारी उसकी सहायता के लिये उसके पास थे पर अभी तक उसे कोई मार नहीं सका था।

दर्जी बोला — "खुशी से। यह तो मेरे बाँये हाथ का खेल है।"

पहली बार की तरह से इस बार भी वह शिकारियों को अपने साथ नहीं ले गया। वे इस बात से बहुत खुश थे क्योंकि वे जंगली सूअर का पहले ही सामना कर चुके थे और अब उसके सामने फिर नहीं जाना चाहते थे।

सूअर ने दर्जी को देखा तो वह उसको जमीन पर गिराने के लिये अपने मुँह में झाग लिये हुए उसकी तरफ दौड़ा पर हमारा तेज़ हीरो जल्दी से पास के एक चर्च में घुस गया। फिर सूअर भी खिड़की से एक ही कूद में चर्च के अन्दर कूद गया।

सूअर उसके पीछे पीछे भागा तो दर्जी खिड़की में से बाहर कूद गया और उस चर्च का दरवाजा बन्द कर दिया। इस तरह से वह भयानक जानवर पकड़ लिया गया क्योंकि वह खिड़की से कूदने के लिये बहुत भारी था। छोटे दर्जी ने शिकारी लोगों को बुलाया और उन्हें पकड़ा हुआ सूअर दिखाया।

दर्जी ने राजा को यह बात बतायी तो राजा चाहता या नहीं चाहता अब उसे अपना वायदा पूरा करना ही पड़ा। उसने दर्जी से अपनी बेटी की शादी कर दी और उसको अपना आधा राज्य भी दे दिया।

अब अगर राजा को यह पता होता कि दर्जी युद्ध का कोई योद्धा नहीं है बल्कि केवल एक छोटा सा दर्जी है तो उसको कितना दुख होता। शादी बहुत धूमधाम से तो हुई पर उसमें कोई खुशी नहीं थी। और एक दर्जी अब एक राजा बन गया था।

कुछ समय बाद रानी यानी दर्जी की पत्नी ने अपने पति को सपने में यह कहते सुना — "ओ लड़के मेरे लिये एक जैकेट बना और मेरी पैन्ट में थेगली लगा देना वरना में तेरे कानों के आरपार गज[18] निकाल दूँगा।"

इस तरह से उसे पता चल गया कि उसका पति कहाँ से आया था। अगली सुबह उसने यह बात अपने पिता से कही और कहा कि वह उसे उस आदमी से छुटकारा दिला दे जो एक दर्जी से ज़्यादा कुछ नहीं था।

राजा ने उसे तसल्ली देते हुए कहा कि वह उस रात अपने सोने वाले कमरे का दरवाजा खुला छोड़ दे। उसके नौकर बाहर खड़े रहेंगे। जब वह सो जायेगा तो वे अन्दर जायेंगे उसे बाँध लेंगे।

[18] Translated for the word "Yardstick"

फिर वे उसको एक जहाज़ पर ले जायेंगे। वह जहाज़ उसको कहीं दूर ले जायेगा।

रानी सन्तुष्ट हो गयी। पर राजा का स्क्वाइर इस नौजवान राजा को बहुत पसन्द करता था। उसने यह सब प्लान सुन लिया और उसको बता दिया।

छोटा दर्जी बोला — "मैं इसको यहीं रोक दूँगा।"

उस रात वह रोज के समय अपनी पत्नी के साथ सोने गया। रानी ने जब यह सोचा कि दर्जी गहरी नींद सो गया तो वह उठी दरवाजा खोला और फिर अपने बिस्तर पर चली गयी।

अब छोटा दर्जी तो सोने का बहाना कर रहा था। वह ज़ोर से साफ आवाज में चिल्लाया — "ओ लड़के मेरे लिये एक जैकेट बना और मेरी पैन्ट में थेगली लगा देना वरना में तेरे कानों के आरपार गज निकाल दूँगा।

मैंने एक ही वार में सात मार डाले हैं दो बड़े साइज़ के आदमियों को मार डाला है एक गैंडे का भगा लाया हूँ और एक जंगली सूअर को पकड़ लिया है तो क्या तू समझता है कि मैं उन लोगों से डरूँगा जो मेरे कमरे के बाहर खड़े हैं।"

जब बाहर खड़े लोगों ने दर्जी को यह कहते हुए सुना तो वे तो इतना डर गये कि वहाँ से इतनी तेज़ भाग लिये जैसे उनके पीछे कोई जंगली जानवरों का झुंड पड़ गया हो।

उसके बाद उसके पास आने की हिम्मत फिर कभी किसी ने नहीं की। जब तक वह रहा वहाँ का राजा बन कर रहा।

5 चमार[19]

एक बार की बात है कि एक चमार था जो एक दिन अपना चमार का काम करते करते इतना थक गया कि उसने अपनी किस्मत कहीं और खोजने की सोची। उसने थोड़ी सी चीज़[20] खरीदी और उसे मेज पर रख दी।

इतने में वहाँ बहुत सारी मक्खियाँ आ गयीं। उसने एक पुराना जूता उठाया और उन पर दे मारा। एक ही बार में सारी मक्खियाँ मर गयीं। बाद में उसने गिना तो **500** मक्खियाँ मर गयी थीं और **400** घायल हो गयी थीं।

फिर उसने अपनी कमर में एक तलवार लटकायी एक टेढ़ा सा टोप पहना और राजा के दरबार में गया और बोला — "मैं एक बहुत बड़ा मक्खीमार हूँ। मैंने **500** मार दीं और **400** घायल कर दीं।"

राजा बोला — "क्योंकि तुम एक योद्धा हो तो तुम इतने बहादुर तो होने ही चाहिये कि तुम उस पहाड़ पर चढ़ सको जहाँ दो जादूगर रहते हैं। जाओ और जा कर उन दोनों को मार दो। अगर तुम उन दोनों को मार दोगे तो तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो।"

---

[19] The Cobbler. A folktale from Italy. From the Book "Italian Popular Tales". By Thomas F Crane. 1885.

[20] Cheese is a kind of Paneer of India but processed.

फिर उसने उसे एक सफेद झंडा दिया जिसे उसने जब फहराने के लिये कहा जब वह उन दोनों जादूगरों को मार दे और साथ में एक बिगुल बजाने के लिये भी कहा। उसने यह भी कहा कि वह उनको मार कर उन दोनों के सिर एक थैले में रख कर ला कर उसको दिखाये।

चमार वहाँ से चल दिया। रास्ते में एक सराय पड़ी तो लो उस सराय के मालिक और उसकी पत्नी तो वही जादूगर थे जिनको उसे मारना था। उसने उससे रहने के लिये जगह और उसको जिस किसी और चीज़ की जरूरत थी वह सब उससे माँग लिया।

उसके बाद वह अपने कमरे में गया तो सोने से पहले उसने कमरे की छत पर एक नजर डाली तो उसने देखा कि उसके बिस्तर के ऊपर तो एक बहुत बड़ा पत्थर है। सो वह बजाय अपने बिस्तर पर जाने के एक कोने में चला गया।

जब एक खास समय आया तो जादूगर ने वह पत्थर नीचे गिरा दिया जिससे उसका पूरा पलंग ही टूट गया।

सुबह को चमार सराय के मालिक के पास गया और उससे कहा कि वह शोर की वजह से रात भर सो नहीं सका। उसने कहा कि अगर ऐसा है तो वह उसका कमरा बदल देगा। पर अगली रात भी ऐसा ही हुआ तो उसने कहा कि वह फिर उसको दूसरा कमरा दे देगा।

अगले दिन सराय का मालिक और उसकी पत्नी जंगल से लकड़ी लेने गये। जब जादूगर घर लौटा तब तक चमार ने एक हँसिया बना लिया था।

सो जादूगर को देख कर वह बोला — "ज़रा रुको। मैं अभी आ कर तुम्हारी पीठ से यह बोझा उतरवाता हूँ।"

उसने जा कर जादूगर को अपने हँसिये से इतनी ज़ोर से मारा कि उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। जादूगर की पत्नी जब वहाँ आयी तो उसने उसके साथ भी ऐसा ही किया।

उसके बाद उसने राजा का दिया हुआ झंडा फहरा दिया और बिगुल बजा दिया।

जब वह राजा के दरबार में पहुँचा तो राजा ने उससे कहा — "अब तुमने दो जादूगरों को तो मार दिया है सो अब तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो।"

पर चमार तो जूते में से धागा खींचने का इतना आदी हो चुका था कि वह तो सोते में भी धागा खींचता रहता था और अपनी पत्नी को मारता रहता था। इससे वह बेचारी सो ही नहीं पाती थी। सो राजा ने उसको बहुत सारा पैसा दिया और उसको उसके घर वापस भेज दिया।

6 बहादुर कुम्हार[21]

एक बार की बात है कि एक बहुत ज़ोर के बिजली तूफान और बारिश की रात में एक चीता उससे बचने के लिये शरण ढूँढ रहा था। वह इससे बचने के लिये एक बुढ़िया की पुरानी झोंपड़ी के पास जा कर बैठ गया।

यह बुढ़िया बहुत गरीब थी। उसकी झोंपड़ी भी बहुत टूटी फूटी थी। कई तरफ से उसकी छत से बारिश का पानी टपक टपक कर अन्दर गिर रहा था। इससे वह बहुत परेशान थी। बारिश के टपके से बचने के लिये कभी वह इधर जाती कभी उधर जाती। कभी कोई चीज़ इधर खिसकाती कभी कोई चीज़ उधर खिसकाती।

और जब वह ऐसा कर रही थी तो कुछ कुछ बुदबुदाती जाती "उफ़ मेरे लिये यह कितनी मुश्किल का काम है। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर यह सब ऐसे ही चलता रहा तो मेरी झोंपड़ी जल्दी ही गिर जायेगी। अगर कोई हाथी शेर चीता भी मेरी झोंपड़ी में आ जाये तो भी मुझे उससे इसका आधा भी डर नहीं लगेगा जितना मुझे इस लगातार टपके से लग रहा है।"

फिर वह अपनी चारपायी और झोंपड़ी की दूसरी चीज़ें खिसकाने में लग जाती ताकि वह उन्हें बारिश के पानी से भीगने से

[21] The Valiant Chattee-maker. From "Old Deccan Days". By Mary Frere. 1868. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

बचा सके। चीता जो झोंपड़ी के बराबर में ही सिकुड़ा खड़ा था यह सब सुन रहा था।

उसने कहा यह स्त्री कह रही थी कि यह किसी हाथी शेर और चीते से उसका आधा भी नहीं डरेगी जितना वह इस "लगातार टपके" से डरती है। यह "लगातार टपका" क्या होता है। लगता है कि यह इन सबसे कुछ ज़्यादा ही भयानक चीज़ होती होगी।

उसने उसको फिर सुना कि वह अपनी झोंपड़ी की चीज़ें इधर से उधर खिसका रही थी। उफ़ यह क्या आवाज आ रही है। यह जरूर ही "लगतार टपके" की ही आवाज होगी।

इसी समय एक कुम्हार वहाँ से अपने गधे को ढूँढता हुआ गुजरा। रात बहुत ठंडी थी सो उसने जरूरत से कुछ ज़्यादा ही ताड़ी[22] पी रखी है। रात में कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। एक बार बिजली चमकी तो उसे बुढ़िया की झोंपड़ी के पास एक बड़ा सा जानवर लेटा हुआ दिखायी दिया।

उसने समझा कि वह उसका गधा था जिसे वह ढूँढ रहा था। सो वह उसी की तरफ दौड़ पड़ा और उसके कान पकड़ कर उसने उसे मारना पीटना शुरू कर दिया।

वह चिल्लाया — "ओ नीच जानवर। क्या इस तरह से मालिक की सेवा की जाती है। इस अँधेरी रात और भारी बारिश में तूने मुझे

[22] Translated for the words "Palm Wine".

घर से बाहर निकलवा कर अपने आपको ढूँढने पर लगाया। चल उठ जल्दी उठ वरना मैं तेरी हड्डी हड्डी तोड़ कर रख दूँगा।"

और वह चीते को डाँटता और फटकारता ही रहा। उसको बहुत गुस्सा आ रहा था।

चीते की समझ में ही नहीं आया कि यह हो क्या रहा था सो वह बहुत डर गया। उसने सोचा "यही "लगातार टपका" होगा। कोई आश्चर्य नहीं कि वह बुढ़िया किसी हाथी शेर या चीते की बजाय इस "लगातार टपके" से इतना डरती है क्योंकि यह तो मुझे भी बहुत ज़ोर ज़ोर से मार रहा है।

इस तरह कुम्हार ने चीते को उठाया उसकी पीठ पर बैठा और उसे जबरदस्ती घर ले गया। क्योंकि वह तो अब तक यही समझ रहा था कि वह अपने गधे पर सवार था। उसे घर ले जा कर उसने अपने घर के सामने वाले लट्ठे से बाँध दिया और अन्दर जा कर सो गया।

अगली सुबह जब कुम्हार की पत्नी जागी और उसने अपनी खिड़की में से झाँका तो उसने क्या देखा कि एक बहुत बड़ा चीता उसके घर के सामने वाले लट्ठे से बँधा हुआ है जिससे वे अक्सर अपना गधा बाँधा करते थे।

वह तुरन्त घर के अन्दर भागी गयी और पति पर चिल्लायी — "क्या तुम्हें मालूम भी हे कि कल रात तुम कौन से जानवर को बाँध कर लाये हो?"

"हाँ हाँ मुझे मालूम है। मैं अपना गधा ले कर आया हूँ।"

पत्नी बोली — "ज़रा बाहर आ कर देखो तो।"

और उसने उसको एक बड़ा सा चीता लट्ठे से बँधा हुआ दिखा दिया। कुम्हार तो यह देख कर अपनी पत्नी से भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया। उसने अपने आपको देखना शुरू किया कि कहीं चीते ने उसे कहीं घायल न कर दिया हो।

पर नहीं। वह तो वहाँ बिल्कुल सुरक्षित खड़ा हुआ था। और उधर चीता लट्ठे से उसी तरह बँधा खड़ा था जैसे उसे उसने कल रात बाँधा था।

कुम्हार की अब यह खबर तो सारे गाँव में फैल गयी। गाँव के सारे लोग उसे देखने आने लगे कि उसने कैसे तो चीता पकड़ा और फिर कैसे उसे पकड़ कर बाँध दिया।

उनको यह इतना अच्छा लगा कि उन्होंने कुछ आदमी एक चिट्ठी लिख कर यह बताने के लिये राजा के पास भेजे कि किस तरह से उनके गाँव के एक कुम्हार ने अकेले बिना किसी हथियार के एक चीता पकड़ कर अपने घर में बाँध रखा है।

राजा ने भी जब यह सुना तो उसको भी आश्चर्य हुआ। उसने अपनी आँखों से यह देखने का विचार किया। उसने अपने घोड़े गाड़ियाँ बुलवायीं। दरबारी और नौकर बुलवाये और वे सब कुम्हार के घर यह तमाशा देखने चले।

अब यह चीता तो बहुत बड़ा था और इसने सारे देश को परेशान कर रखा था। इससे यह मामला और भी असाधारण हो गया था।

इस घटना से प्रभावित हो कर राजा कुम्हार को बहुत तरह के इनाम देना चाहता था। सो राजा ने उसको कई घर दिये कई जमीनें दीं और कुँआ भर कर पैसे दिये। उसको अपने दरबार में दरबारी बना लिया। साथ में उसके नीचे दस हजार घोड़े रख दिये।

कुछ समय बाद की बात है कि एक पड़ोसी राजा जिसकी इस राजा से बहुत दिनों से दुश्मनी चली आ रही थी इस राजा से युद्ध की घोषणा कर दी।

साथ में यह भी खबर मिली कि वह दुश्मन राजा इस राजा की सीमा पर अपने सेना डाले बैठा था और उसकी सेना बस अपने मालिक के हुक्म पर किसी भी पल हमला करने के लिये तैयार थी।

ऐसी हालत में किसको क्या करना चाहिये यह किसी को पता नहीं था। राजा ने अपने सारे जनरल बुलाये और उनसे पूछा कि उनमें से कौन सा जनरल उसकी सेना को सँभालने वाला था।

सबने कहा कि उनका देश इस तरह के हालात के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था और ऐसे समय में तो उनकी हार निश्चित थी। इसलिये उनमें से कोई भी इस समय सेना का बोझ नहीं सँभाल सकता था। राजा नहीं जानता था कि वह इस समय किसको अपना जनरलों का सरदार नियुक्त करे।

तब उसके कुछ लोगों ने उसको सलाह दी — "आपने अभी अभी एक कुम्हार को दस हजार सिपाहियों की सेना सौंपी है। आप उसी को जनरलों का सरदार क्यों नहीं बना देते। एक आदमी जो अकेला बिना किसी हथियार के इतना बड़ा चीता पकड़ कर अपने घर में बाँध सकता है उसको तो सबसे ज़्यादा बहादुर और अक्लमन्द होना ही चाहिये।"

सो उसने कुम्हार को बुलवाया और कहा — "मैं अपने पूरे राज्य की बागडोर तुम्हारे हाथों में सौंपता हूँ। अब तुम्हारा काम यह है कि तुम हमारे दुश्मन को यहाँ से भगाओ।"

कुम्हार बोला — "जैसी आपकी इच्छा। पर इससे पहले कि मैं अपनी सारी सेना दुश्मन के सामने ले जाऊँ आप मुझे दुश्मन की सेना को देखने की इजाज़त दीजिये। और हो सके तो मुझे उनकी संख्या और ताकत जानने की इजाज़त दीजिये।"

राजा ने इजाज़त दे दी। कुम्हार अपने घर अपनी पत्नी के पास आया और बोला — "राजा ने मुझे अपने जनरलों का सरदार बना दिया है और यह काम तो मेरे लिये बहुत मुश्किल है क्योंकि इस काम करने के लिये मुझे सारी सेना के आगे आगे जाना पड़ेगा।

और तुम्हें पता है कि मैं तो कभी घोड़े पर चढ़ा नहीं। इसके लिये मैंने राजा से कुछ समय खरीद लिया है। राजा ने मुझे पहले अकेले वहाँ जाने की इजाज़त दे दी है ताकि मैं दुश्मनों की सेना का अन्दाजा लगा सकूँ।

क्या तुम मुझे एक बहुत ही शान्त टट्टू दे सकती हो जिस पर चढ़ कर मैं चला जाऊँ क्योंकि तुम्हें मालूम है कि मुझे घोड़े की सवारी तो आती नहीं। मैं कल सुबह चला जाऊँगा।"

लेकिन इससे पहले कि कुम्हार वहाँ जाता राजा ने उसके लिये एक बहुत ही शानदार घोड़ा जो बहुत कीमती साज सज्जा से सजा हुआ था भेज दिया और उससे विनती की कि वह जब सेना को देखने जाये तो उसी घोड़े पर बैठ कर जाये।

कुम्हार तो उसको देख कर बहुत परेशान हो गया क्योंकि वह घोड़ा जो राजा ने उसके लिये भेजा था वह तो बहुत तेज़ और ताकतवर था। उसको यकीन था कि वह उस पर कभी बैठ तक नहीं पायेगा। और अगर किसी तरह बैठ भी गया तो तुरन्त ही वह उस पर से गिर पड़ेगा।

फिर भी वह राजा को मना तो नहीं कर सकता था क्योंकि वह राजा की भेंट को स्वीकार न कर के राजा को गुस्सा करना नहीं चाहता था।

सो उसने राजा को एक धन्यवाद का सन्देश भेजा और अपनी पत्नी से कहा — "मैं अब टट्टू पर नहीं जा सकता क्योंकि राजा ने मेरे लिये यह घोड़ा भेजा है। पर इस पर मैं सवारी कैसे करूँ।"

पत्नी बोली — "इतना मत डरो। तुम बस इस पर बैठ जाना मैं तुम्हें इससे कस कर बाँध दूँगी ताकि तुम इससे गिरो नहीं। और

अगर तुम रात को जाओगे तो तुम्हें कोई देख भी नहीं पायेगा कि तुम घोड़े से बँधे हुए हो।"

कुम्हार बोला — "यह ठीक है।"

सो उस रात उसकी पत्नी वह घोड़ा ले कर दरवाजे पर आयी जिसे राजा ने उसके लिये भेजा था।

कुम्हार ने घोड़े को देखते ही कहा — "अरे यह तो बहुत ऊँचा है मैं इस पर बैठूँगा भी कैसे।"

पत्नी ने कहा — "तुम इस पर कूद कर बैठ जाओ।"

कुम्हार ने उसके ऊपर कई बार कूद कर बैठने की कोशिश की पर हर बार वह उस पर से गिर जाता था। कुम्हार बोला — "मैं जब भी कूदता हूँ तो मैं भूल जाता हूँ कि इस पर बैठने के लिये मुझे किस तरफ घूमना चाहिये।"

पत्नी बोली — "तुम्हारा मुँह घोड़े के मुँह की तरफ रहना चाहिये।"

और फिर वह एक ही कूद में घोड़े के ऊपर बैठ गया पर उसका मुँह घोड़े की पूँछ की तरफ था। उसकी पत्नी ने कहा "ऐसे बिल्कुल नहीं चलेगा।" कह कर उसने उसको नीचे उतारा और कहा कि वह उस पर बिना कूदे चढ़े।

वह फिर बोला — "जब मैं अपना बाँया पाँव पायदान पर रखता हूँ तो बिल्कुल मुझे याद नहीं रहता कि मुझे दाँये पैर का क्या करना है या उसे कहाँ रखना है।"

पत्नी बोली — "उसको दूसरे पायदान पर जाना चाहिये। देखो मैं तुम्हारी सहायता करती हूँ।"

क्योंकि घोड़ा नया था सो वह टिक कर खड़ा नहीं हो पा रहा था सो बहुत कोशिशों के बाद कई बार नीचे गिरने के बाद कुम्हार उस घोड़े पर बैठ सका। जैसे ही वह घोड़े पर बैठा तो वह चिल्लाया "मुझे जल्दी से घोड़े से बाँधो नहीं तो मैं गिर जाऊँगा।"

सो वह एक मजबूत रस्सी ले कर आयी और उससे उसके दोनों पैर पायदान से बाँधे। दोनों पायदानों को एक साथ बाँधा। एक और रस्सी उसने उसकी कमर में बाँधी एक रस्सी उसने उसकी गर्दन में बाँधी और फिर दोनों को घोड़े के शरीर गर्दन और पूँछ से बाँध दिया।

उधर जब घोड़े ने अपने चारों तरफ रस्सी बँधी महसूस की तो उसकी समझ में नहीं आया कि कौन सा अजीब सा प्राणी उसके ऊपर बैठ गया है। उसने तुरन्त ही हिनहिनाना कूदना और पैर फेंकना शुरू कर दिया। अन्त में वह कुलाचें भरता हुआ देश में से हो कर दौड़ चला।

कुम्हार चिल्लाया — "प्रिये प्रिये। तुम मेरे हाथ बाँधना तो भूल ही गयीं।"

पत्नी बोली — "कोई बात नहीं। तुम उनसे उसकी गरदन के बालों को पकड़ लो।"

सो उसने घोड़े को उसकी गरदन के बालों से पकड़ लिया।

उधर घोड़ा भागता गया साथ में उसके भागता गया कुम्हार। गड्ढों के ऊपर हैजेज़ के ऊपर पहाड़ियों के ऊपर खेतों से हो कर। बिजली की गति से भागता हुआ वहाँ आ पहुँचा जहाँ दुश्मन का कैम्प लगा हुआ था।

कुम्हार को घोड़े की यह सवारी बिल्कुल अच्छी नहीं लगी और जब उसने देखा कि वह कहाँ आ कर खड़ा हो गया तो वह जगह तो उसको और भी खराब लगी।

उसने फिर एक कोशिश की वह घोड़े से आजाद हो सके क्योंकि उसको लगा कि अभी दुश्मन उसको पकड़ लेगा और उसको मार देगा। सो इस आशा में कि शायद वह किसी पेड़ को पकड़ने से अपनी रस्सियाँ खोल सके उसने रास्ते में हाथ बढ़ा कर एक छोटे से बरगद के पेड़ को पकड़ना चाहा।

पर घोड़ा बहुत तेज़ गति से भाग रहा था और वह मिट्टी जिसमें वह पेड़ लगा हुआ था ढीली थी सो बजाय उसकी रस्सी खुलने के वह पेड़ ही उखड़ आया और अब वह पेड़ हाथ में लिये घोड़े पर सवार चला जा रहा था।

दुश्मन के कैम्प वालों ने सुना कि राजा ने उनके खिलाफ अपनी सेना उनकी तरफ भेज दी है। और फिर जब देखा कि एक आदमी हाथ में पेड़ लिये उनकी तरफ चला आ रहा है तो उनको लगा कि उस सेना का लीडर चला आ रहा होगा। वह बहुत तेज़ी से आ रहा था।

उन्होंने आपस में कहा — "देखो यह यह आदमी तो इतनी तेज़ी से जंगल के पेड़ उखाड़ते हुए चला आ रहा है। यह दुश्मन का ही आदमी लग रहा है। सारी सेना इसके बस पीछे ही होगी। अगर इसकी सारी सेना ऐसी ही होगी जैसा कि यह खुद है तो बस हम तो मर गये समझो।"

सो उनमें से कुछ राजा के पास भागे गये — "राजा। दुश्मन की सेना आ रही है। सेना के सिपाही बहुत बड़े साइज़ के लोग हैं। सब बहुत ही ताकतवर घोड़ों पर चढ़े हुए हैं। वे गुस्से में भरे हुए जंगल के पेड़ उखाड़ते चले आ रहे हैं। हम लोग आदमियों से तो लड़ सकते हैं पर इतने बड़े साइज़ के लोगों से नहीं।"

तभी कुछ और लोग आ पहुँचे। उन्होंने भी कहा कि ये लोग सच कह रहे हैं। तब तक कुम्हार उनके और पास आ चुका था। सो वे चिल्लाये "भागो भागो।" सो सारी सेना कैम्प छोड़ कर वहाँ से भाग ली। उन लोगों ने जिनको इसमें कोई डर नहीं लग रहा था केवल इसलिये भाग गये क्योंकि दूसरे लोग भाग रहे थे।

कैम्प छोड़ देने के बाद दुश्मन राजा को राजा को अपनी सील लगा कर अपने दस्तखत कर के एक दोस्ती का सन्देश भेजना पड़ा कि "हम आपसे दोस्ती चाहते हैं।"

कैम्प से दुश्मन लोग बस भाग कर गये ही थे कि कुम्हार अपने घोड़े पर सवार बरगद का पेड़ लिये हुए वहाँ आ पहुँचा। वह तो थकान की वजह से अधमरा हो रहा था।

जब वह कैम्प पहुँचा तो उसकी रस्सियाँ ढीली हो कर खुल गयीं थीं सो वह नीचे गिर पड़ा। घोड़ा भी थक गया था सो वह भी खड़ा रह गया। आगे नहीं जा सका।

जब कुम्हार को होश आया तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सारा कैम्प खाली पड़ा था। पर वहाँ उसे बहुत सारे कीमती हथियार कपड़े और दूसरा सामान मिल गया। सबसे मुख्य वाले टैन्ट में एक चिट्ठी मिली जो दुश्मन राजा ने सुलह के लिये लिखी हुई थी।

उसने वह चिट्ठी उठायी और घर वापस आ गया। सारे रास्ते वह उसकी बागडोर पकड़ कर पैदल ही आया क्योंकि यहाँ उसकी पत्नी तो थी नहीं जो उसे घोड़े पर सवार करा देती।

अबकी बार वह सीधे रास्ते से गया तो घर जल्दी ही पहुँच गया। पिछली बार वह लम्बे रास्ते से आया था ताकि वह वहाँ आधी रात के समय पहुँचे। उसको जल्दी ही वापस आया देख कर उसकी पत्नी उससे मिलने के लिये बाहर दौड़ी आयी।

जैसे ही कुम्हार ने अपनी पत्नी को देखा तो बोला — "ओह प्रिये। जब से मैं तुमसे आखिरी बार मिला था तबसे तो मैं दुनियाँ घूम आया हूँ। बड़े भयानक और आश्चर्यजनक घटनाओं का सामना किया है मैंने। पर अभी उनकी बात करने की कोई बात नहीं है अभी तो तुम इस चिट्ठी को और इस घोड़े को राजा के पास भेजने का इन्तजाम करो।

इस घोड़े को थका हुआ देख कर वह अपने आप ही समझ जायेंगे कि मैं कितनी लम्बी यात्रा कर के आया हूँ। अगर यह बात हम उनको पहले ही बता दें तो मुझे उतनी सुबह को उनके दरबार में उनके सामने जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी जैसे कि मैं रोज जाता हूँ।

सो उसकी पत्नी ने वह चिट्ठी और घोड़ा दोनों राजा के पास भिजवा दिये और कहलवाया कि उसका पति अगले दिन सुबह ही दरबार में हाजिर होगा क्योंकि अभी बहुत रात हो गयी है।

जैसा उसने कहा था अगले दिन वह वहाँ गया। लोगों ने उसे आते देखा तो बोले — "अरे यह आदमी तो बहादुर होने के साथ साथ कितना शालीन भी है कि दुश्मन को अकेले भगा कर भी यह कितनी सादगी से दरवाजे से चला आ रहा है। ऐसा नहीं है कि जैसे ऐसा करने के बाद कोई भी शान से यहाँ आता यह उस ढंग से आया हो।"

7 अप्पय्या की कहानी[23]

दूर के एक गाँव में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। हालाँकि उसकी शादी हुए कई साल बीत गये थे पर उसके कोई बच्चा नहीं था। उसकी एक बच्चे की बहुत इच्छा थी पर पहली पत्नी से कोई बच्चा न होने की वजह से और न ही उससे भविष्य में कोई बच्चा होने की आशा की वजह से उसने दूसरी शादी करने का विचार किया।

पहले तो उसकी पत्नी ने इस शादी के लिये उसे मना किया पर जब उसने देखा कि उसके पति ने तो पक्का इरादा कर लिया है तो वह राजी हो गयी। उसने सोचा कि वह किसी तरह से उसकी दूसरी पत्नी को उससे दूर कर देगी।

अब क्या था जैसे ही उसे अपनी पत्नी की इजाज़त मिली उसने एक सुन्दर ब्राह्मण लड़की से शादी कर ली। वह लड़की भी ब्राह्मण की पहली पत्नी के साथ ही उसी मकान में रहने लगी। अब पहली पत्नी किसी ऐसी घटना के होने के इन्तजार में थी जिससे वह उसे बदनाम कर सके।

[23] The Story of Ayyappa. From "The Tales of the Sun". by Mrs Howard Kingscote and Pundit Natesa Sastri. 1890. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com
Compare the tale of "Fattu, the Valiant Weaver". Indian Antiquary. Vol 11. p 282.

ईश्वर तो खुद ही उसकी दूसरी शादी के पक्ष में थे सो एक साल बाद उसकी दूसरी पत्नी को बच्चे की आशा हो गयी। छठे महीने वह बच्चे के जन्म के लिये अपनी माँ के घर चली गयी।

उसका पति ने उसका अलग रहना पन्द्रह दिन तक तो सहा पर फिर उसके मन में उसको देखने की इच्छा फिर से हो आयी। वह अब अक्सर अपनी पहली पत्नी से पूछता कि उसे उससे मिलने के लिये कब जाना चाहिये।

पहली पत्नी को अपने पति से पूरी सहानुभूति थी। वह बोली — "प्रिय। तुम्हारी तन्दुरुस्ती तो रोज रोज गिरती ही जा रही थी। मुझे खुशी है उसके लिये तुम्हारे प्यार ने तुम्हारी तन्दुरुस्ती को और ज़्यादा खराब नहीं कर दिया है। तुम उससे मिलने के लिये कल सुबह ही चले जाओ।

कहा गया है कि बच्चों, राजा और एक बच्चे की आशा रखने वाली स्त्री के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिये। सो मैं तुम्हें एक सौ अपूप लड्डू दूँगी जो एक अलग बर्तन में रखे होंगे। तुम वे उसे ले जा कर दे देना।

अपूप तो तुमको भी बहुत अच्छे लगते है सो तुम कहीं उन्हें रास्ते में ही न खा लेना इसलिये तुम्हारे लिये मैं कुछ अपूप अलग से दूँगी जिन्हें तुम अपनी यात्रा में खा सकते हो।"

रात भर बैठी बैठी वह अपूप बनाती रही। अपनी सौत के लिये उसने जो अपूप बनाये उसकी चीनी में उसने जहर मिला दिया। पर

अपने पति से तो उसकी कोई दुश्मनी नहीं थी सो उसने उसके लिये अच्छे वाले अपूप बनाये थे। सुबह होते ही उसने एक सौ अपूप एक पीतल के बर्तन में बाँध दिये जिसे उसका पति आसानी से अपने सिर पर रख सकता था।

क्योंकि यात्रा पर जाने से पहले भारी नाश्ता यात्रा के लिये ठीक नहीं रहता इसलिये पति सुबह हल्का सा नाश्ता करने के बाद अपनी दूसरी पत्नी को देखने के लिये चल दिया।

अपूप का बर्तन उसने अपने सिर पर रख लिया और दूसरे अपूप की पोटली उसने हाथ में लटका ली। उसकी दूसरी पत्नी के गाँव तक वहाँ से दो दिन की यात्रा थी।

वह जल्दी जल्दी चला जा रहा था कि शाम हो आयी। तेज़ चलने की वजह से वह थक भी गया और अब उसे भूख भी लग आयी थी तो उसने सड़क के किनारे ही एक शैड देखा और उसके पास ही एक तालाब देखा तो वह वहीं बैठ गया।

शाम की सूरज की पूजा करने के लिये हाथ मुँह धोने के लिये वह तालाब में घुसा क्योंकि सूरज देवता तो बस अब जाने ही वाले थे। पूजा खत्म कर के उसने अपना रूमाल खोला जिसमें उसके खाने के लिये अपूप बँधे हुए थे। वह उनको पूरा का पूरा खा गया। उसे अपूप बहुत अच्छे लगते थे सो उसने वे अपूप तुरन्त ही खत्म कर दिये।

फिर उसने पानी पिया। थकान से उसका शरीर चूर चूर हो रहा था सो अपना खाना खा कर वह वहीं शैड में सो गया। पत्नी के लिये जो अपूप वह ले कर जा रहा था उनका बर्तन उसने अपने सिर के नीचे रख लिया।

जहॉ ब्राह्मण सो रहा था वहीं पास में एक राजा रहता था जिसके एक बहुत सुन्दर बेटी थी। बहुत लोगों ने शादी के लिये उसका हाथ मॉगा। ऐसे उम्मीदवारों में से एक डाकुओं का सरदार भी था जो उसे अपने बेटे के लिये चाहता था।

हालॉकि राजा को वह लड़का अच्छा लगता था क्योंकि वह बहुत सुन्दर था पर क्योंकि वह एक डाकू था यही विचार राजा को खटकता रहता था। पर डाकुओं के सरदार ने भी अपना दिमाग बना रखा था वह अपने तरीके से अपना काम करना चाहता था।

उसने अपने गिरोह के एक सौ आदमी उसी रात राजकुमारी को सोते में उठा लाने के लिये राजा के घर भेज दिये। उनको कहा गया था कि वे राजकुमारी को उसके पलंग सहित उठा कर लायें। राजकुमारी को भी इस बात का पता नहीं था।

जब वे डाकू शैड के पास से गुजरे तो उन्हें बहुत प्यास लगी क्योंकि रात को जागने से प्यास तो लगती है। तो उन्होंने राजकुमारी का पलंग तो जमीन पर रख दिया और तालाब की ओर पानी पीने चल दिये।

तभी उनहें अपूप की खुशबू आयी – वे अपूप जो ब्राह्मण अपनी पत्नी के लिये लिये जा रहा था। वे अपूप जिनमें जहर मिला था।

डाकुओं ने इधर उधर देखा भाला तो उनहें शैड में एक ब्राह्मण सोता हुआ मिल गया। उसने अपने सिर के नीचे जो पीतल का बर्तन लगाया हुआ था वह उसके सिर से कुछ ही दूरी पर पड़ा था। लगता था कि रात को सोते में जब उसने अपने हाथ इधर उधर फैलाये होंगे तो वह बर्तन अपनी जगह से हट गया होगा।

उन्होंने वह बर्तन खोल कर देखा तो उसमें तो अपूप रखे थे और वे भी पूरे सौ। अरे वाह यह तो आनन्द आ गया। अब हमें खाली पानी पीने की जरूरत नहीं है। अब हम सब एक एक अपूप खायेंगे और उसके बाद पानी पियेंगे।

गिरोह के सरदार ने कहा — "चलो एक एक अपूप खाओ और फिर पानी पी कर आगे बढ़ते हैं।"

जैसे ही हर एक ने अपना अपना अपूप खाया वह मर कर नीचे गिर पड़ा। यह बात अच्छी थी कि किसी को ब्राह्मणी की चाल का पता नहीं था। अगर डाकू लोग यह बात पहले से ही जानते तो उनमें से कोई भी ब्राह्मण के अपूप नहीं खाता। इसके अलावा अगर ब्राह्मण को भी यह बात पहले से पता होती तो वह उन्हें अपनी प्रिय पत्नी के लिये ले कर ही नहीं जाता।

सो यह सब बेचारे ब्राह्मण और उसकी दूसरी पत्नी की अच्छी किस्मत थी सोती हुई राजकुमारी की अच्छी किस्मत थी कि वे सारे जहरीले अपूप डाकुओं ने खा लिये थे।

सुबह को ब्राह्मण जब अपनी नींद पूरी होने पर उठा तो उसने देखा कि उसके अपूपों का बर्तन तो वहाँ कहीं नहीं है और बाहर बहुत सारे लोग मरे पड़े हैं। उन आदमियों को तो वह पहचान गया वे डाकू थे।

पर अपने बर्तन के खोने पर उसे बहुत गुस्सा आ रहा था। उसने वहाँ पड़े एक आदमी की तलवार उठायी और उससे सब आदमियों के सिर काट डाले।

जब वह उनके सिर काट रहा था तो वह यही सोच कर उनके सिर काट रहा था कि वह ज़िन्दा लोगों के सिर काट रहा है जो उसके लड्डू खा कर वहाँ सो रहे थे क्योंकि उसे तो पता ही नहीं था कि अपूपों में जहर था और वे जहरीले अपूप खा कर वे डाकू मर गये थे।

जब वह उनके सिर काट रहा था तो उसकी निगाह राजकुमारी के पलंग पर पड़ी। वह उधर की तरफ बढ़ा तो उसने देखा कि उस पर तो एक बहुत सुन्दर लड़की सोयी हुई है।

अपनी अक्लमन्दी से अब उसका रहा सहा शक भी पक्का हो गया था कि जिन आदमियों के सिर उसने काटे हैं वे यकीनन ही डाकू थे जो उस लड़की को उठा कर ले जा रहे थे।

उसका यह शक भी जल्दी ही दूर हो गया क्योंकि तभी उसने राजा और उसके साथियों की आवाजें सुनी वे कह रहे थे "पकड़ो पकड़ो उस डाकू को पकड़ो जो हमारी राजकुमारी को ले आया है।"

ब्राह्मण ने तुरन्त ही सोच लिया कि यह इस लड़की का पिता होगा सो उसने यकायक ही लड़की को जगाया और उससे कहा — "देखो तुम्हारे घर से तुम्हें ये सौ डाकू उठा लाये थे। मैंने उन्हें अकेले ने ही मार दिया है।"

राजकुमारी तो यह सुन कर बहुत खुश हुई क्योंकि उसे मालूम था कि ये डाकू पहले भी उसके साथ ऐसी ही चालें खेलने की कोशिशें कर चुके हैं। सो वह आदर के साथ ब्राह्मण के पैरों पर गिर पड़ी।

वह बोली — "दोस्त। आज तक मैंने ऐसा कोई बहादुर नहीं सुना जो अकेला ही सौ लोगों से लड़ा हो और उसने उन सबको मार दिया हो। तुम्हारी बहादुरी तो तारीफ के काबिल है। इस याद में कि तुमने मेरी इन जंगलियों से जान बचायी है मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगी।"

उसका पिता और उसकी सेना वहीं पास तक आ गयी थी। राजा भी डाकुओं के सरदार की हर हरकत पर नजर रखे था सो जैसे ही उसने सुना कि डाकू उसकी बेटी को उठा कर ले गये हैं तो वह तुरन्त ही अपनी सेना ले कर जंगल की तरफ चल पड़ा।

राजा अपनी बेटी को सुरक्षित देख कर तो बहुत ही खुश हो गया। उसने दौड़ कर अपनी बेटी को गले लगा लिया। उधर राजकुमारी ने ब्राह्मण की तरफ इशारा कर के बताया कि उस ब्राह्मण ने उसकी डाकुओं से रक्षा की है।

राजा ने उससे हजारों सवाल पूछे। अब ब्राह्मण तो लड़ाई की कला में होशियार था सो उसने राजा को बहुत अच्छे जवाब दिये। और इस तरह से उसने अपना पहला कारनामा पूरा किया।

राजा तो उसकी इस बहादुरी पर बहुत चकित हुआ। वह उसे अपने महल ले गया और उससे अपनी बेटी से शादी कर दी। और अब वह एक राजा का दामाद बन गया।

राजकुमारी के देश के पास ही एक शेरनी रहती थी जिसे आदमी का मॉस खाना बहुत अच्छा लगता था इसलिये राजा को हर हफ्ते एक आदमी उसके खाने के लिये भेजना पड़ता था।

एक दिन सब लोग राजा के पास गये और बोले — "योर मैजेस्टी। अब तो आपके पास एक इतना अच्छा दामाद है जिसने अपनी तलवार से सौ डाकुओं को मार डाला था तो अब आपको हर हफ्ते एक आदमी को भेजने की क्या जरूरत है। हम सब आपसे विनती करते हैं कि अगले हफ्ते आप उन्हें भेज दें वह उसे मार देंगे।"

राजा को यह सुझाव बहुत पसन्द आया तो उसने अपने दामाद को बुलवाया और उसे शेरनी को मारने के लिये अपने कुछ सैनिकों

के साथ जंगल भेज दिया। अब ब्राह्मण मना तो कर नहीं सकता था कि कहीं उसका पहला काम बेकार न हो जाये।

यह सोचते हुए कि इस काम में भी उसकी किस्मत उसका साथ देगी उसने अपने ससुर से कहा कि वह उसे एक बरगद के पेड़ पर सारे किस्म के हथियार दे कर बिठवा दें। राजा ने वैसा ही करवा दिया।

शेरनी के खाने का समय पास आ रहा था। वह आयी तो उसने देखा कि वहाँ तो कोई नहीं था। कभी कभी कुछ लोग जंगल में इधर उधर हो जाते थे तो वह उसी पेड़ के नीचे आ कर उनका इन्तजार करती थी सो वह वहीं आ कर खड़ी हो गयी जिस पेड़ के ऊपर वह ब्राह्मण बैठा था।

यह देख कर ब्राह्मण तो बहुत डर गया। वह काँपने लगा। इस काँपने में उसके हाथ में पकड़ी हुई तलवार नीचे गिर गयी।

उसी समय शेरनी ने जँभाई लेने के लिये अपना मुँह खोला तो वह तलवार सीधी उसके मुँह में जा गिरी और वह उसी समय मर गयी।

ब्राह्मण ने जब यह देखा तो वह नीचे उतर आया और राजा को बताने के लिये हजारों कहानियाँ सोचने लगा कि उसने शेरनी को कैसे मारा। इस काम ने तो उसकी साख और भी बढ़ा दी। उसके सम्मान में बहुत सारी दावतें हुईं। सारे देश ने राजा के दामाद को आशीर्वाद दिये।

इस राज्य के पास एक बहुत बड़े राजा का राज्य था। वह पड़ोस के सारे राजाओं से टैक्स वसूल करता था। इस राजा को हमारे ब्राह्मण का ससुर भी टैक्स देता था।

अब ब्राह्मण के ससुर के पास तो ब्राह्मण जैसा बहादुर आदमी था जिसने अकेले ने सौ आदमी मर दिये एक शेरनी को मार दिया था सो अपने दामाद की ताकत पर विश्वास कर के उसने उस राजा को टैक्स देना बन्द कर दिया। इस राजा का नाम अप्पय्या राजा था।

अप्पय्या राजा को जैसे ही टैक्स नहीं मिला तो उसने ब्राह्मण के ससुर पर हमला बोल दिया। ससुर ने अपने दामाद से सहायता माँगी। बेचारा ब्राह्मण फिर से उन्हें मना नहीं कर सका क्योंकि अगर वह करता तो उसकी पुरानी साख भी चली जाती।

इसलिये उसने यह काम करने की भी सोची। उसने सोचा कि उसे किस्मत पर ज़्यादा भरोसा रखना चाहिये बजाय कोशिश छोड़ देने के।

उसने राजा से उसका सबसे अच्छा घोड़ा और सबसे तेज़ धार वाली तलवार माँगी और दुश्मन से लड़ने चल दिया। दुश्मन का कैम्प नदी के उस पार लगा हुआ था जो उस शहर के पूर्व में कुछ ही दूरी पर बहती थी।

राजा के पास एक नया घोड़ा था जो पहले कभी किसी लड़ाई में नहीं गया था। उसने वह घोड़ा अपने दामाद को दे दिया और एक

तेज़ धार की तलवार दे कर उसे लड़ाई के लिये रवाना किया। ब्राह्मण ने नौकरों से कहा कि वे उसे घोड़े की जीन पर बिठा कर रस्सियों से बाँध दें। नौकरों ने ऐसा ही किया और वह अपने काम पर चल पड़ा।

घोड़े ने पहले कभी किसी को अपनी पीठ पर बिठाया नहीं था सो यह देख कर वह गुस्से में भर कर ज़ोर ज़ोर से दौड़ने लगा। वह इतनी ज़ोर से दौड़ रहा था कि देखने वालों को लग रहा था कि उसके सवार की जान खतरे से खाली नहीं। ब्राह्मण खुद भी डर के मारे मरा जा रहा था।

उसने अपने घोड़े को काबू में करने की बहुत कोशिश की पर वह काबू में ही नहीं आ रहा था। जितनी ज़ोर से वह उसकी लगाम खींचता वह उतनी ही तेज़ी से दौड़ता। उसने अपनी ज़िन्दगी को भगवान के हाथों में छोड़ दिया था। इससे उसकी रस्सियाँ ढीली हो गयी थीं।

नदी के पास आ कर घोड़ा नदी में कूद गया और उसे तैर कर उसके दूसरे किनारे पर आ पहुँचा। इससे वे सब रस्सियाँ जिनसे बँधा हुआ ब्राह्मण घोड़े पर बैठा था वे सब गीली हो गयी थीं। गीली होने की वजह से वे फूल गयी थीं और अब उनसे ब्राह्मण के शरीर में दर्द होने लगा था। वह बेचारा उसे सहता रहा।

घोड़े ने नदी पार कर ली थी और अब वह नदी के दूसरी तरफ आगे बढ़ रहा था कि ब्राह्मण को एक ताड़ का पेड़ दिखायी दे गया

जिसे अभी हाल की बाढ़ ने काफी उखाड़ दिया था। इतना उखाड़ दिया था कि ज़रा सा हाथ लगने से ही वह गिर सकता था।

अब ब्राह्मण घोड़े को तो रोक नहीं सकता था सो डर के मारे उसने वह ताड़ का पेड़ कस कर पकड़ लिया। ताड़ का पेड़ तो पहले से ही बहुत ढीला था वह उखड़ कर उसके हाथ में आ गया। घोड़ा अभी भी बहुत तेज़ी से भाग रहा था। अब उसकी यह समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह पेड़ को पकड़े रहे तब ज़्यादा सुरक्षित है या जब उसे छोड़ देगा तब ज़्यादा सुरक्षित रहेगा।

वह इस निराशा में चिल्लाया "अप्पा अय्या।" घोड़ा अभी भी भाग चला जा रहा था। और घोड़े पर ब्राह्मण अभी भी सवार था। उसके हाथ में अभी भी ताड़ का पेड़ था।

हालॉकि ब्राह्मण तो अपनी जान बचाने के लिये भागा जा रहा था पर जो लोग दूर से उसे भागते हुए देख रहे थे उनको वह ताड़ के पेड़ के साथ युद्धभूमि में जाता हुआ दिखायी दे रहा था।

जब वह "अप्पा अय्या" चिल्लाया था तो दुश्मन ने समझा कि वह उनको चुनौती देता हुआ चला आ रहा है क्योंकि उनके राजा का नाम अप्पय्या था। यह देख कर तो वह डर ही गये कि दुश्मन की सेना का लीडर जब ताड़ का एक बड़ा से पेड़ लिये उनको चुनौती दे रहा है तो उसकी सेना का क्या हाल होगा।

बस यह सोचते ही वे युद्धभूमि से भाग लिये। "यथा राजा तथा प्रजा"। सारी सेना वहॉ से भाग निकली। इस तरह पल भर में ही

दुश्मन की सेना वहाँ से गायब हो गयी। उधर घोड़ा भी थक हार कर महल लौट आया।

राजा जो कुछ नदी के पार हो रहा था यह सब अपने सबसे ऊँचे कमरे से देख रहा था। उसे विश्वास हो गया कि उसके दामाद में कोई अनोखी ताकत है जिससे उसने उसके दुश्मन को भगा दिया है सो उसके लौटने पर वह उसका स्वागत करने गया।

ब्राह्मण की रस्सियाँ काटी गयीं जिनमें जकड़ा वह घोड़े पर बैठा था। राजा ने उससे अपना और अपने देश का आभार प्रगट किया। उसको सारे नगर में घुमाया गया।

इस तरह तीन अलग अलग मौकों पर तीन अलग अलग परिस्थितियों में किस्मत ने ब्राह्मण का साथ दिया और उसे मशहूर कर दिया। फिर उसने अपनी दोनों पुरानी पत्नियों को महल में बुला भेजा। उसकी दूसरी पत्नी जिसको बच्चे की आशा थी जब वह उसके लिये अपूपा ले कर चलना शुरू किया था और जब तक वह फिर ब्राह्मण के पास आयी तो उसका बेटा एक साल का हो गया था।

पहली पत्नी ने अपना अपराध स्वीकार किया कि उसने अपनी सौत के लिये जहर भरे अपूप भेजे थे और ब्राह्मण से माफी माँगी। तब उस समय ब्राह्मण को पता चला कि पहली बार में जो उसने सौ आदमियों के सिर काटे थे वे ज़िन्दा के नहीं बल्कि मुर्दा लोगों के

काटे थे। उन्होंने यकीनन ही मेरी पत्नी के बनाये हुए अपूप खाये होंगे।

और क्योंकि उसकी इस नीचता ने उसकी ज़िन्दगी को एक नयी शुरूआत दी थी उसने अपनी पत्नी को माफ कर दिया। उधर उसने भी अपने पति की पत्नियों से द्वेश रखना छोड़ दिया। उसके बाद चारों बहुत दिनों तक शान्ति से रहे।

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (9 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Ram Laxman Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचाया जा सकेगा।

विंडसर कैनेडा

2022